लीला सुधा सिन्धु
पद्य रामायण
: रचयिता :
श्रीमद् स्वामी रामहर्षणदास जी महाराज

॥ श्री सीतारामाभ्याँ नमः ॥

लीला सुधा सिन्धु

(पद्य रामायण)

* रचयिता *

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज

वसंत पंचमी

(विक्रम सं २०६३)

लीला सुधा सिन्धु (पद्य रामायण)

रचयिता :

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज

प्रकाशक :
प्रकाशन विभाग
श्री रामहर्षण कुंज,
परिक्रमा मार्ग,
अयोध्या (उत्तर प्रदेश)
दूरभाष : (०५२७८) २३२३१७

तृतीय आवृत्ति : ११००
वसंत पंचमी
(विक्रम सं २०६३)

मूल्य : रु. १५० मात्र

टाइप सेटिंग एवं डिज़ाइन :
डी टी पी सेन्टर, सरस्वती सद्नम कॉम्पलेक्स,
धरमपेठ, नागपुर - ४४० ०१०
दूरभाष : (०७१२) २५६०९८९

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दास जी महाराज

अनुक्रमणिका

******

भक्त शालि सिञ्चन हित उनयो, शीतल सुखद स्वनाम।
कार्मुक ताप विनाशि जगत त्रय, करिहैं अति अभिराम।
प्रेम पाथ हिय सरित सरोवर, भरिहैं ललित ललाम।
मनुआ मोर मोरनी बुद्धिहु, करिय नृत्य अठयाम।
सुख समृद्धि हरि हरि लखि पुहुमी, लहिहैं लोचन काम।
दुरित दुरास दोष दुख दुःसह, जरिय जवास तमाम।
हर्षण करहु प्रतीति सत्य कह, आनँद ठामहिं ठाम।

(३७२)

सहज स्वभावहिं रस रस रघुवर जात।
मन्द मन्द मानहु मतंग मग, चलत अभय निज सुख सरसात।
अतिशय ललित लोभानी गति लै, मधुर मधुर मधुमय मुसकात।
हर्षण हेरि जनक पुर वासी, रसमय रसे रसहिं रस खात।

(३७३)

राम रसिक रघुनन्दन हो, मन मोहन मोहैं।
नवल नवल नृप नन्दन हो, नव नेहन जोहैं।
सुठि सौन्दर्य समुद्र समाना, मधु माधुर्य महोदधि बाना,
सौकुमार्य सुख कन्दन हो, छवि छहरत छोहैं।
सौष्ठव लावण ललित अनूपा, मोहक वशीकरण रस रूपा,
कोटि कोम मद मन्दन हो, जग पट तर कोहै।
रस रस जात रसहिं उपजावत, मन्द मुसुकि चित चारु चोरावत,
चितवनि हरि दुख द्वंदन हो, नृप संसदि सोहै।

सुषुमा सुख श्रृँगार सुहाया, वपु धरि सुर नर मुनिहु मोहाया,
हर्षण हित हिय चन्दन हो, दृग देखत दोहै।

(३७४)

राम रूप माधुर्य महोदधि, पुरजन परिजन डूबि गये हैं।
जनक जाय कौशिक पद पकड़े, प्लव ऐश्वर्यहिं खोय दये हैं।
कहेउ नाथ रघुनन्दन मंगल, मंगल मंगल चहौं चये है।
सिया बरूक ब्याहे बिन सहि हौं, जो जय बवै सो लुने लये हैं।
राम अमंगल सहौ न नेकहुँ, आत्म विनशि विश्वास कये हैं।
रावरि कृपा भले भल दर्शै, राम लहहि सिय कीर्ति जये हैं।
तिहरे हाँथहि अमिय हलाहल, करहु यथा रुचि शीश नये हैं।
कौशिक कहे सदाशिव हर्षण, पुरिहैं मन की अभय भये हैं।

(३७५)

नेह विवश सिय मातु भई री।
लखि लखि लाल ललित सुकुमारहिं, तन मन सुधिहिं भुलाय दई री।
धीरज त्यागि सखिन ते बोली, अहह आज विधि काह कई री।
बाल मराल कहा गिरि धारै, सिरस सुमन किमि वज्र जई री।
राम पराभव दृग कत देखिहैं, चहत फटन हिय हानि हई री।
चतुरि सखी कह भ्रम कहँ त्यागहु, राज कुअँर वर वीर चयी री।
सब समर्थ गुनि पठय गाधि सुत, लखहु असंशय मोद मई री।
बाल तमारि त्रिजग तम नाशत, हर्षण सुनि सो धीर लई री।

(३७६)

हरण हार हिय के अति नीके हैं।

कोटि कोटि कन्दर्प दर्प हर, पुंसा मोहन टीके हैं।

सुख सुन्दरता सीव सुधाकर, लक्ष्मी निधि लखि बीके हैं।

कुसुमहु कोमल कलित समुझि मन, विनवत भल भरि भीके हैं।

प्रपति छोड़ि गति एक न मोरे, जो पै सत्य सुधीके हैं।

सीताराम सेव निष्कामी, हृदय होइ भव फीके हैं।

तो प्रभु अबहिं राम धनु भंजी, वरहिं सियहिं जिय जीके हैं।

संशय शोक समूह हरहिं हरि, हिय हर्षण हिय हीके हैं।

(३७७)

चितवत चतुर चारहुँ ओर।

मनहुँ पूँछत सबहिं जन ते, का पिनाकहिं तोर।

मन्द मुसुकनि मोहि सब कहँ, पहुँचि तेहि के ठौर।

शम्भु सह पुनि प्रणामि धनुषहिं, खड़्यो चित को चोर।

दृष्टि अमृत सींच जन जन, कलित कृप की कोर।

हरित हिय ह्वै सुखहिं सानी, सकल सभा विभोर।

निरखि अपलक प्रेम पागे, यथा चन्द्र चकोर।

हर्ष कर बहु विनय विधि ते, राम शिर रखु मौर।

(३७८)

सीता हृदय हेरि मन माहीं।

प्रीति परखि दृढ़ निश्चय आनति, राम बिना तन नाहीं।

लखि रस रूप मधुर मन मोहन, धीरज धिय ते जाहीं।
गणपति गौरि शम्भु सुर सुमिरति, आर्त दशा अति आही।
आरत हरण हरु अकरि चापहिं, करु अति कोमल ताही।
कंजहु ते मृदु पाणि परसि प्रभु, जेहि ते दुख नहिं पाहीं।
बिनु श्रम तोरि पिनाकहिं रघुवर, विजय कीर्ति मोहिं लाही।
निज अशीष सेवकाइ सुफल करि, देहि हर्ष सब काहीं।

(३७९)

अब मोहिं शम्भु चाप गति तोरी।
होहु हरुअ रघुपति अवलोकी, विनय करौं कर जोरी।
शिव आयसु ते कियो पिता प्रण, तोहिं खण्डै वर सोरी।
समुझि सदाशिव शासन सत सत, सादर शीश धरो री।
राम पाणि प्रिय पर्शहिं पावत, निज तन त्याग तरो री।
पर उपकार वचन मन काया, संत स्वभाव खरो री।
संप्रति सबै समाज दुखारी, सुख से ताहि भरो री।
हर्षण हृदय समुझि मम भावहिं, पितु प्रण पूर करो री।

(३८०)

अंतर यामी हे भगवान।
प्रीति प्रतीनि यथा सब जानत, घट घट बसहिं सुजान।
जेहिं की जस श्रद्धा तस प्रतिफल, सब श्रुति संत प्रमान।
जाको जेहि पै सत्य प्रेम हिय, अवशि मिलै सो आन।

तेहिं ते विनय मोर सुनि सब कर, करिहैं कल कल्यान।
रघुपति की किंकरि मोहिं करिहैं, सब समर्थ बड़ि बान।
वर विश्वास हिये धरि दृढ़ कर, अबलौं जियति जहान।
हर्ष असह प्रिय प्राप्ति की देरी, छटपटात मम प्राण।

(३८१)

अब नहिं जियहु धीरज धरे।
निमिष कालहु कल्प भाषत, प्रेम पथ अनुसरे।
शम्भु चापहिं राम भंजहिं, या न तोरहिं अरे।
देह इन्द्रिय बुद्धि आतम, रमहिं रामहिं वरे।
हाय दु:सह अर्ध छनहूँ, प्राण गवनहिं करे।
नयन लोभी लाग श्यामहिं, अन्य सब परिहरे।
कहौं केहि ते कौन जानहि, विरह वह्निहिं जरे।
हर्ष क्षण मधि राम प्राप्ति, या कि तन तजि तरे।

(३८२)

प्रीतम यहि क्षण मिलियो मोय, तुम बिन जियहिं दुसह दुख होय।
जल बिनु मीन विकल जग जैसे, यथा कुयोगी प्राण प्रलैसे,
तलफि तलफि मम प्राण चलन चह, विरही वह्नि विलोय।
प्रभा जाय कहँ भानुहि छोरी, कहाँ चन्द्रिका चन्द्रहिं कोरी,
अति अनन्य हौं तिहरी दासी, चरण सेव जिय जोय।
सोह न पंकज बिनु प्रिय पानी, शशि बिनु रजनी न नेक सुहानी,
थितिहु अलग नहिं देखेव कोई, मरत मलिन अब रोय।

आरत हरण शरण सुख दायक, प्रीति पारखी परम सहायक,
धनुष भंजि पूरण परमेश्वर, लहहिं हर्ष मम होय।

(३८३)

अंतरयामी जान जियहिं री।
परम कृपालु राम रघुनन्दन, प्रीति रीति पहिचान हियहिं री।
नेह नयन आश्रित जन रक्षक, ताकेउ तेहि क्षण सुखद सियहिं री।
बहुरि लखेउ भव चाप चतुर अति, यथा गरुड़ लघु व्याल लियहिं री।
मनहु कहत धरु धीर किशोरी, समुझि धनुहिं दुइ खंड कियहिं री।
तिहरो नवल नेह बल वर्धक, तेहिं लै अघटहिं घटय दियहिं री।
तापै लहि गुरु आयसु आयो, संशय भ्रम सब दूर भियहिं री।
हर्षण प्रीति पुरान परस्पर, लखि ललि लहन ललात धियहिं री।

(३८४)

राम रस रसे, कमर पट कसे, चाप लखि लसै, सबहिं रस रसै
अवध वारो हो॥
श्याम सुभाय, छबिहिं छहराय, सभा सरसाय, महा मुद पाय
चहत धनु छुअन, छुअत तेहि तोरन, जनक दुख दरन,
शरण सुख करन हृदय हारो हो।
तमहिं तमारि, यथा द्रुत टारि, जगत उजियारि, सुखहि सुख सारि,
यथा नृप सुवन, सिया शोक शमन, दुरित दुख दमन,
मदन मन मोहन प्राण प्यारो हो।

सुमन सुदेव, झरहिं शुचि सेव, जयति कहि धेव, महामुद तेव,
सिद्ध सब लखै, विनय वर भषै, नयन रस चखैं,
हृदय रसि रखै हर्ष भारो हो।

(३८५)

रघुवर धनु ताकेव लखन लखे हैं।
चरण चापि ब्रह्माण्ड पुलकि तन, गद गद बोले वचन सखे हैं।
शेष कमठ दिशि कुंजर कोला, श्रवण सुनहु सब सुरहु झखे हैं।
राम चहहिं शंकर धनु भंजन, आयसु मोरी करहु भषे है।
सजग होइ धरि धीरज हिय महँ, धारहु धरिणिहिं शिरहिं रखे हैं।
सुस्थिर करहु हिलै नहिं नेकहु, नाहित भय भरि जगत जके हैं।
सेवा समुझि करहु कर्तव्यहिं, सदा सहायक ईश पखे हैं।
तीन लोक निर्द्वन्द रही संत, हर्षण हर्षित रसहिं चखे हैं।

(३८६)

देखी विकल विदेह लली।
निमिष विहात कल्प सम कडुए, मुरझि रही हिय कमल कली।
यहि छन मध्य धनुहिं नहिं भंजौ, देह त्यागि पर लोक चली।
पीछे तोरि कहो का करिहौं, काह लहौंगो रंग थली।
मृतकहिं यथा औषिधी दीने, समय चुके पछिताव फली।
अस विचारि रघुनंदन मन महँ, चाहेव तोरन चाप ढली।
मन ते गुरुहिं प्रणमि भर भावहिं, शम दम तेज विकास बली।
हर्षण सहज उठाय पिनाकहिं, सोह सुमन धनु काम भली।

(३८७)

गुरुहिं सुमिरि सोहे रघुवर रसाल हैं।
हर्षि हरुअ जोहे धनुहिं गरुड़ व्याल हैं।
पाणि प्यारि परश दीन, पूत भले भाँति कीन,
सहज ताहि पुनि उठाय, करि ज्यों पंकज मृणाल हैं।
दमकि दामिनी उदोति, लपकि लोचननि न ज्योति,
घनहिं बीच यथा भयो, धनु नभ मंडल प्रचाल हैं।
यथा चाप कियो पर्शि, लेत औ चढ़ाय कर्षि,
लखे न कोउ ठाढ़ सबहिं, देखे दशरथ के लाल हैं।
तेहिं क्षण मधि धनुहि तोर, भरो सबहिं भुवन शोर,
सुर नर मुनि मूँदि कर्ण, कोउ नहिं निज तन सँभाल है।
शंकर समाधी जाग, आसन विधि उचकि भाग,
भान हयहु मगहिं त्यागि, दौरें इत उत विहाल हैं।
शेष काढ़ि फनहिं हाय, धरा धरे शिरहि नाय,
दिग्गज चिघार कूर्म, त्रिभुवन हा हा न ख्याल है।
लखन चापि चरण चेत, धरा हिलन नाँहि देत,
धनुष भंग धुनिहु गई, हर्षे जग जन सुकाल हैं।

(३८८)

श्री निधि प्रमुदित लाय धरे।
रत्न जटित सुन्दर सिंहासन, सुख कर सुर मुनि मनहिं हरे।
पाणि पकरि तेहिं पै बैठायो, रस मय रामहिं रसहिं झरे।

पान गंध दै शुचि स्त्रग मेली, आत्म निवेदन प्रभुहिं करे।
छत्र चमर सिर ढारत सुख सनि, कहि न जाय जस भाव भरे।
उर को प्रेम उमगि उठि ऊपर, पुलक कंप दृग वारि ढरे।
रामहु परशि कुँअर तन सरसत, निरखि निरखि सुख सिन्धु चरे।
हर्षण हृदय सुमिरि सो सुख कहँ, पागे प्रेम प्रवाह परे।

(३८९)

बाजे नभ-नगर निशान री।
सुर ब्रह्मा विष्णु महेश विमानन, सुरगण सहित सुहान री।
सुर तरु सुमन इत्र रँग वर्षै, जय जय जयति बखान री।
नाचहिं गावहिं सुर वर वामा, गंधर्वी गुणवान री।
भूमि मगन मन तिय गन मंगल, गावन लगी लुभान री।
विप्र वेद वर विरदहिं बंदी, पढ़त हृदय हुलसान री।
बाजहिं वाद्य विपुल धुनि जय जय, पृथ्वी गगन समान री।
मणि गण वसन निछावर करि करि, हर्षहिं लोग लुगान री।

(३९०)

हर्षित हृदय भयो है धनु टूटे ते।
जनक सुनैना श्रीनिधि सिद्धि, बूड़त थाह लहे दुख छूटे ते।
देत दान वारिद सम वर्षत, सीता राम सनेह अटूटे ते।
पुर नर नारि सभा सब तैसहि, प्रमुदित रंक महत निधि लूटे ते।
सिय सुख कहै कौन विधि गाई, अनुभव गम्य अकथ छल छूटे ते।

मनहु चातकी पाइ स्वाति जल, पूरण काम भई प्रण जूटे ते।
मुदितलखनप्रभुशशिमुखनिरखत, कौशिक पियत राम रस बूटे ते।
रामहिं सिय जयमाल पिन्हावहिं, हर्षण आयसु गौतम ढोटे ते।

(३९१)

सखियाँ सुनि के सिया को सम्हारी भली।
कनक अंगी कुसुम कोमल, शत शशि सी आनन की प्रभा,
रति रमोमा कोटि वारहिं, नख द्युति की आभा नहिं लभा,
प्यारी मधुरी मधुरिमा की महिमा लली।
सुभग सौष्ठव ललित लावण, पद्म गंधिनि तन मह महा,
सुखद सौरभ लहि सुबायुहु, विकस वितरत बहु अह अहा,
सोहे सुन्दरि सुकुमारी स्वरूप थली।
शीश ते नख लौं अनूपम, रुचि रुचि के भूषण हैं सजे,
चम चमाते भानु के सम, सांड़ी सुनहलू अति छजे,
राजै अलियाँ चतुर्दिशि सुशोभा ढली।
चमर विंजन छत्र छड़ि लै, सेवा सु साजहिं कर धरे,
गीत गावहिं वाद्य वादहिं, हर्षण मुनिहु के मन हरे,
माला लैके सखिन सँग श्री सीता चली।

(३९२)

शोभित सीता अधो दृग प्यारी।
मन्द मन्द पग धरति धरणि पै, शील सकोच स्वरूप ढरनि पै,
तन ते रवि शशि कोटि प्रभा की, छिटकि रही चहुँ दिशि उजियारी।

कर सरोज जय मालहिं लीन्हे, पिय पहिरावन मति मन दीन्हे,
कीर्ति विजय स्वयमहि सब अर्पण, प्रीति पगी मधुरे रस वारी।
सिय यश मिश्रित मधुरी वानी, गावहिं गीत सखी सुख सानी,
राज रही रस रूप अलिन बिच, हर्षण चन्द्र नखत बिच चारी।

(३९३)

सुकुमार सिय प्यारी, सोहे सुखन सुख सार।
मन्द मन्द मधुरी गति गवनति, मधुरी मधुर रस धार।
कंकण किंकिणि नूपुर मधुमय, श्रवणन सुखद झनकार।
दमकि दमकि दामिनि द्युति वंती, छहरै छबी अनियार।
हिय तम हरणि ज्योति जग परमा, देवैं सबहिं उजियार।
सुख सुषमा श्रृँगार की मूरति, अनुपम अकथ बुधि हार।
सुर नर मुनि सब लहि दिवि दर्शन, सिगरे भये भव पार।
हर्षण देव निशान वजावहिं, वर्षैं सुमन नर नार।

(३९४)

सीता सुहावनि जात चली, जयमाला लिये मन मोहनी।
सुन्दर सुगन्धित हार अनुपम, काम रच ज्यों हित प्राण प्रियतम।
रंगी बिरंगी सुहात भली, तेहिं कलियाँ कलित सुठि सोहनी।
मधुमय मधुरे मोहन रामहिं, चितय चतुरि दृग निम्न स्वभावहिं,
जाने न कोऊ दुराति लली, लखि लाजति हिये छवि छोहनी।

जाइ निकट गइ ठुठुकि किशोरी, नेह नवल रस रीतिहिं बोरी,
हर्षण हिलोरे उठात थली, अलि पीती भरी रस दोहनी।

(३९५)

सोह सखिन संग सुन्दरि बाला, राम समीप खड़ी।
लोग लखन चह माला, सिय-कर प्रभु के गलहिं पड़ी।
ऋषि मुनि वेद उचारैं, दुँदुभि देत पुकारैं,
देव जयति तेहिं काला, झरत प्रमोद प्रसून झड़ी।
नयन दिये सिय ओरी, सकल सभा रस बोरी,
बने सबहिं सुख शाला, युग छबि झूलति दृगहिं गड़ी।
चतुर सखी समुझाई, सुनहु सिया सुख दाई,
पहिरावहु जयमाला, राम गले सुख खानि घड़ी।
सुन सिय माल उठाई, पै पहिनाय न जाई,
प्रीति विवश प्रणपाला, सिर नत सकुचि लजाय अड़ी।
शोभा तेहि क्षण सोही, जनु जिय रामहिं जोही,
कहि कत होत विहाला, ललचावति लालहिं अकड़ी।
धनु भंजन की बेरी, तलफायो पिय चेरी,
सुध करि दशरथ लाला, हर्षण काहे न धीर धड़ी।

(३९६)

लली लाजै लखि लाल लिये माल को।
पहिरावै न रसिया रसाल को॥

अलि गन खड़ी चहुँ ओर श्री सीय के लगे,
श्याम श्यामा प्रीति में वे अतिशय पगे,
छबि गावैं लखत ललि लाल को॥
सुर नर मुनि दृग देखि देखि नहे में रँगे,
वर्षि पुष्पहिं जयति जय सब कहने लगे,
रसि रासै मधुर मधु बाल को॥
सिर को झुकाय रसिक राम लखै ललिहिं देर किये,
कहर कहर हीय करत सीय प्रेम के पिये,
मन मोहै मुसुकि भल भाल को॥
शोभा सु प्रीति शेष शारदहू न कहि सकै,
हर्षण अनंतहि एक मुख ते कहू कत बकैं,
दृग दोहै रसहि रस शाल को॥

(३९७)

सखि निरखैं युगल रस राज, नेह दृग भोरी सी।
बोली वचन धीर धरि मधुरे, सुनिये रसिक रघुराज॥ नेह॥
षोड़स वर्ष वयस तुम ऊँचे, बड़ी वेदिका भ्राज॥ नेह॥
तेहि पै क्रीट मुकुट सिर सोहे, बैठ सिंहासन साज॥ नेह॥
षट वर्षा मोरी ललि छोटी, नीचे खड़ी हित काज॥ नेह॥
कब ते खड़ी पहुँचि नहिं पावति, दया न तुम्हरे लाज॥ नेह॥
हार लहन हित शीश झुकावहुँ, हर्षें सकल समाज॥ नेह॥
हर्षण मन्द मुसुकि रघुनन्दन, हृदय हरे सिर ताज॥ नेह॥

(३९८)

समय समुझि मिथिलाधिप बाला।
सुख सनि मेली, रघुवर के गले में जयमाला।
जयमाल जब परी, आनन्द झरि झरी,
सुर नर मुनि सब डूबि गे तेहि में तेहिं घरी,
बोले विधि हरि हरहु जय सिय राम रसाला।
सुर पुष्प भुइँ झरे, वर्षि इत्रहिं अरे,
कुँकुमा केशर वरषि गगनहि ते हिय हरे,
गावहिं गुण गण देखि देखि दोउ भूपति लाला।
नचैं नभ में तिया, कंठ कोकिल प्रिया,
मधुर मधुर संगीत सबहिं को सुख भर दिया,
तैसहिं भौमा भूमि महानँद भो मधु शाला।
तिय प्रेम में पगी, सिय राम रँग रँगी,
करि करि मंगल गान हर्षि हिय निरखन लगी,
हर्षण आरति करहिं निछावर में मणि माला।

(३९९)

आरति श्री सिय सिया रमण की, करहिं नारि नर शोक शमन की।
भुइँ अरु व्योम बजत बहु बाजे, जय जय धुनि दश दिशि ते गाजै,
आनँद लहर उमगि सुख साजै, वृष्टि होति बहु सुखद सुमन की।
मंगल गान करहिं नव नारी, रति शत शशिहि लजावन वारी,
पिक वयनी हिय हर्ष अपारी, लखि लखि युगल किशोर नमन की।

विप्र वेद कवि विरद उचारै, करि निवछावरि सब सब वारै,
भाव विभोर न निजहिं निहारै, वित्त विसारि भूलि तन मन की।
जो सुख भयो परत जयमाला, सो सुख स्वप्न न जग के जाला,
धनि धनि सीता राम रसाला, हर्षण के दुख दोष दमन की।

(४००)

आनँद आनँद चारो ओर बह्यो री सजनी, मिथिला मही मझारी,
रामवरी सिय भंजेउ धनुषहि, विजयमाल लहि लोर, नयन लखु लजनी।
ब्रह्मा विष्णु महेश सुरन सह, करत जयति जय शोर, सुमन झरियजनी।
साम गान वर वाद्य बहुलता, गुणि गंधर्व अथोर, लहै सुख भजनी।
नचहिं अप्सरा और किन्नरी, गंधर्वी रस वोर, दृगन दै अँजनी।
मागध सूत भाँट कवि बन्दी, विरद वदहिं बनि भोर, कहै को कुँजनी।
जनक मुदित मन धनहिं लुटावत, मघा मेघ जल जोर, मनहु महि छजनी।
हर्षण हर्ष त्रिलोकहिं छायो, श्याम सुभग चित चोर, दोष दुख तजनी।

(४०१)

झाँकी बनी क्या खूब श्यामा श्याम की।
चन्द्रकला सुभगादि अलिन बिच, सोह कोटि रति काम की।
सौ शत शशिहु सिमिटि एक रासी, तुलै न मुख सिय राम की।
रंग भूमि नभ विद्युत घन सम, उलहत उपमा नाम की।
महा भाव भरि सरित सिन्धु ज्यों, छहरत छबि सुख धाम की।
सहस सूर्य सम सहज प्रकाशित, शीतल बहु बिधु ठाम की।

नख शिख वसन विभूषण भूषित, अंग अंग अभिराम की।
नयन वंत हर्षित हिय हर्षण, रूप रसिक अठ याम की।

(४०२)

युग युग जीवै युगल वर जोरी।
श्याम गौर सुख सिन्धु समोई, रस की रसिक रसहिं रस वोरी।
छबि की खानि रसिक जन जीवनि, मधुमय मधुर मधुहिं मधु घोरी।
प्रीति पगी सबके चित कर्षति, वर्षति रसहिं सबहिं के ओरी।
घन दामिनि द्युति छहरति महि महँ, दश दिक वितरित बृहद अँजोरी।
वसन विभूषण अँग अँग राजित, रवि सम तेज कहे कवि कोरी।
निरखत भक्त नेह नव नृत्यहिं, घन लखि मनहुँ मोर अरु मोरी।
हर्षण हृदय हर्षि हुलसाई, गावहिं गुणहिं जाल जग तोरी।

(४०३)

कैसी जोड़ी बनी छवि छावनियाँ।
क्रीट चन्द्रिका सिरहि सुशोभित,
कोटि सूर्य सम दमकत लोभित,
अलकै भ्रमर भुलावनियाँ।।

केशर खौर तिलक वर वेदी,
सोह सुभग वशकरनि अभेदी,
माथे मनहिं मोहावनियाँ।।

श्रवण सुभग कुण्डल कनफूला,
हिलत मीन जनु झूलत झूला,

चितवनि चित्त चोरावनियाँ।
नासामणि नक बेसर हलरी,
परसति होंठ लगत बहु भलरी,
अधरामृतहिं लोभावनियाँ।
शारद शशि शत विजित वरानन,
शीतल सुभग सुखद शुभ दानन,
मुसुकि अमिय वरषावनियाँ।
जयमाला हिय हार मणिन को,
कीरत कलित प्रकाशक प्रिय को,
कंकण करहिं सोहाबनियाँ।
कटि किंकिणि पद नूपुर हर्षण,
सामहु लजत शब्द सुनि झन झन,
पद तल योगी रमावनियाँ।

(४०४)

करि रस रीति यथा विधि अलियाँ।
सीतहिं चली लिवाय मातु ढिग, प्रीति पगी पिय के भलि भलियाँ।
नयन ओट चाहति नहिं रामहिं, लोक कानि श्रुति ते बड़ि बलिया।
हृदय राखि शुचि श्यामल मूरति, भाव भरी गवनी सुख सलियाँ।
पूर्ण मनोरथ सोह सखी सब, विकसी हृदय कमल की कलियाँ।
आनँद आनन मग जनु झाँकत, गावत गीत गई गलि गलियाँ।
वर्षत सुमन देव जय बोलत, दुंदुभि बजति गगन नच ललियाँ।
हर्षण पंच धुनी भुइँ भ्राजति, बाजति प्रेमिन की करतलियाँ।

(४०५)

मंगल मंगल मंगल गावोरी, सिय जू को अचल सोहाग मनाओरी।
दम्पति प्रेम पगे निशिवासर, रस में रसे रसहिं वर्षा कर,
सुख में सने रहें पिय प्यारी, सखि सब उरहिं उमगि पुलकाओरी।
मिथिला अवध विहार करैं दोउ, कंचन विपिन प्रमोद बसैं मोउ,
कमला सरयू सरित विक्रीडै, आनँद आनँद आनँद पावो री।
मंगल देखैं मंगल परसै, मंगल सुनै श्रवण सुख सरसैं,
मंगल चखैं सुमंगल सूँघै, सुर नर मुनि के चित चायो री।
चन्द्रकीर्ति त्रिभुवन प्रिय प्यारे, बनै रहै रसिकन सुख सारे,
सदगुण सिन्धु विजय यश मानहिं, हर्षण अचल विमल लहि भायो री।

(४०६)

सहज स्वभाव राम रघुनन्दन।
उठि सोउ चले गाधि सुत पाहीं, नृप के शोक शमनि जग वन्दन।
सखन सहित लक्ष्मीनिधि सेवित, हर्ष विषाद विना सुख कन्दन।
पहुँचि प्रणाम किये गुरु चरणहिं, मुनिहु मेलि हिय कीन्हेव चन्दन।
सहित लखन सिगरे ऋषि प्रमुदित, निरखि भक्तभय हरण स्वछन्दन।
पुनि कौशिक दोउ बन्धुहि लीन्हे, वासहिं चले मेटि दुख द्वन्दन।
देत दुन्दुभी देव सुमन झरि, स्तुति करत कट्यो प्रभु फंदन।
हर्षण हर्षित नगर नारि नर, लखत राम मुख मुसकत मन्दन।

(४०७)

कौशिक को निदेश पाइ जनक, शतानन्दहिं औध को पठाये हैं।
दशरथ और वशिष्ट हर्ष मिले, आदर दै मान को बढ़ाये हैं।
राम लखन कीर्ति मुनिहु गाय, अवध ते मिथिला लौं सुहाय,
जनक विनय गाधि सुत आयसु कहयो, लै बरात पुरहिं बोलाये हैं।
सुनतहिं श्रवण सुख में समाय, बार बार पूँछि कुशल राय,
रानिन ते जाय सहित भरत, वरणि ब्याह राम को सुनाये हैं।
लगीं गावन मंगल सुमातु, फैली चर्चा पुर में प्रभात,
आनँद में बूड़ि घरन घरन, बजन लगे नित्य नव बधाये हैं।
गुरु आज्ञा वर बरात साज, चले भूपति भल लै समाज,
राम लखन प्रीति पगे हर्ष, सुरहु सुमन वरषि जयति गाये हैं।

(४०८)

इतै विदेह वितान बनाये।
कनक खचित मणि विद्रुम रत्नन, बनी साज जेहि की सब ठायें।
देखत चकित भये विधि हरि हर, मुनि मन हरण सुरन्ह ललचाये।
सहजहिं मिथिलापुरी सोहावनि, तदपि सकल सब भाँति सजाये।
नीच सदन श्री-दम्पति लखि लखि, मन महँ मोहित इन्द्र लजाये।
निमि पुर ते नृप सरयू सरि लौं, वास भवन जहँ तहँ बनवाये।
असन वसन मन भावत शयनहु, भूषण साज अनेक धराये।
दासी दास तहँ मन जोगवत, हर्षण हृदय हर्षि तहँ छाये।

(४०९)

विहरैं जहाँ सिया सुखदाई।
रिधि सिधि जेहिं की करत खवासी, पाणि जोरि पद लोटि लुभाई।
उमा रमा ब्रह्माणी उपजहिं, जाके अंश अमित प्रभुताई।
हाँथ जोरि सिर आयसु धरि के, करत जगत को काज डेराई।
तेहि पुर शोभा कहै कवी को, शेष गणेश गिरा नहिं गाई।
अवध सरिस कमला तट नरपति, विरचे वर जन वास सोहाई।
नाम अयोध्या कौशिक दीन्हेउ, सब सुपास सब समय बुझाई।
हर्षण चक्रवर्ति जहँ वसिहैं, लै बरात शुभ दिवसहिं आई।

(४१०)

छप्पय–आवत जानि बरात जनक बजवाय निशाना।
पुत्रहिं बोलि पठाय दियो बनि कै अगवाना।
मिले यथा विधि सबहिं, दोउ दल हर्षित भारी।
स्वागत शिष्टाचार, भयो दै भेंट अपारी।
प्रीति परस्पर देखि कै, मुदित देव वर्षत सुमन।
दुँदुभि हनि जय जय कहैं, दुहुँ दिशि बाजत वाद्य गन।

(४११)

दोहा– करि वर विनय लिवाय चले, प्रमुदित जनवासा।
हय गय रथ न विराज, बरात बनी छबि छासा।
बाजन विविध प्रकार, बजत कहि जाय न शोभा।

मनहु महेन्द्र समाज, मदन सह मन मति लोभा।
बन्दी विरद उचारहीं, स्वांग विदूषक मग करत।
विप्र वेद मंगल पढ़हिं, जय धुनि दस दिक सुख भरत।

(४१२)

बहु विधि किये बनाव, करत उत्सव अगवाना।
नचत अपसरा जात, भरी भावहिं करि गाना।
प्रमुदित धनहिं लुटाव, याचकहिं करत अयाचा।
बने अमानी आय, लहत सेवा सुख साँचा।
मिथिलामधि सुख भरि गयो, पहुँचत नगर बरात के।
मैथिल सिगरे हर्षहीं, आनँद सिन्धु समाय के।

(४१३)

आज लली जू के ब्याह की बरतिया, सखि हे सुखप्रद ऐली,
लखि घन नाचै मन मोर॥सखि॥
देखो घोड़वा टप टप धावै, हथिया झूमत मस मस आवै,
सुनै रथहूँ के शोर की सुहनियाँ, घर घर सुनि सुख भैली,
बाजा बजे घन घोर॥सखि॥
प्रमुदित सुरहू नभ में छाये, चढ़ि विमनवाँ गगनहिं भाये,
वरषि सुर तरु के डाल की सुमनियाँ, सुखसनि दुँदुभि दैली,
जय जय बोले बनि विभोर॥सखि॥

ब्राह्मण सस्वर वेद पुकारैं, बन्दी विरदावली उचारैं,
स्वँगवा विदूषक भाँट की कहनियाँ, उर उमगायल कैली,
हर्षण हियरा हिलोर।।सखि।।
अग्नि क्रीड़नक बहुविधि भायो, दीपावलि जग जग छबि छायो,
अटा चढ़ी नव नारिन की मुरतिया, विद्युत प्रति प्रति गैली,
पुर जन देखैं रस बोर।।सखि।।

(४१४)

कमला तीरे दियो जन वासा।
अवध नाम जेहि कियो गाधि सुत, अवध समान प्रकाशा।
तनय तिया द्विज सखा साधु गुरु, सेनप सचिव सुदासा।
सहित समाज बसे तहँ दशरथ, पृथकहिं पृथक अवासा।
सुर तरु सुरभी वसन विभूषण, भोग विभूति विकासा।
रिद्धि सिद्धि सब टहल करै जहँ, जोगवहिं सबन्ह सकासा।
नौवति नवल नित्य नृप द्वारे, बाजति वढ़य हुलासा।
गृह सुधि भूलि बरात सुधा सनि, हर्षण वसी सुपासा।

(४१५)

भैया कहहु कहाँ हैं राम।
गाधि तनय सह बसत कहाँ पै, ऋषि कुटीर या नरपति धाम।
तरसत नयन बन्धु दोउ निरखन, कनक वर्ण वपु वारिद श्याम।
चक्रवर्ति के वचन श्रवण सुनि, श्री निधि बोले अति अभिराम।

सब विधि कुशल अहैं अति नीके, माँसल शोभिल चमकत चाम।
निवसत राज सदन सुख सागर, मंगल मंगल आठहु याम।
कोटि काम कमनीय सुभग तन, चन्द्र कीर्ति निर्मल गुणग्राम।
नयन पुतरि राखत पितु माता, हर्षण सुखी अहैं मम भाम।

(४१६)

सुनत श्रवण पितु आय गये हैं।
राम लखन मन मुदित हर्ष हिय, अंग अंग पुलकाय चये हैं।
मिलन चाह जिय अतिशय उपजी, उत्कन्ठा उर छाय नये हैं।
गाधि तनय लखि भाव प्रेम पगि, ललकि लाल लपटाय लये हैं।
शीश सूँघि मंगल अनुशासन, जयति जयति जय गाय गये हैं।
बहुरि चले जन वास दुहुँन लै, ऋषि मुनि संग सुहाय मये हैं।
दशरथ देखि दौरि मुनि पायन, परे वारि दृग काय दये हैं।
हर्षण कौशिक द्रुतहिं उठाये, हृदय मेलि सुख पाय पये हैं।

(४१७)

नृप पद राम लखन शिर नाये।
ललकि उठाय लिये दोउ लालहि, नेह नीर नहवाये।
हिय छपकाय चहत नहिं छोड़न, विरही वह्नि बुझाये।
चूमि बदन सिर सूँघि दुलारत, निरखत नयन डुबाये।
चिबुक कपोल पाणि निज फेरी, पूँछत कुशल सुभाये।
गुरु पितु मातु प्रसाद प्रमोदहिं, कहे राम मुसुकाये।

सत्य सुभग लखि प्रेम परम सुर, वर्षि सुमन जय गाये।
हर्षण निरखि नवल दोउ भाइन, सबहिं दृगन फल पाये।

(४१८)

गुरु को करत प्रणाम गोसैया।
देखि वशिष्ट हृदय महँ लीन्हे, राम लखन दोउ भैया।
शीश सूँघि आशिष बहु दीन्हे, नेह नीर दृग छैया।
तैसहिं सकल द्विजन मिलि भेंटे, साधु सचिव सुख दैया।
करत प्रणाम भरत सह भ्रातहिं, मिले प्यारि पुलकैया।
लखनहु परम प्रेम मिलि दोउन, हर्षे हिय हरषैया।
पुरजन परिजन मिले यथोचित, प्राण प्राण प्रिय पैया।
सकल समाजहिं सुठि सुख दीन्हे, हर्षण के रघुरइया।

(४१९)

कौशिक सौंपे राम लखन।
बोले लेहु कुशल निज वारे, चक्रवर्ति करु विषय चषन।
कार्य किये भल भाँतिहि मेरो, सेव सुरीति सम्हारि मखन।
अस्त्रादिक दै विद्या बहुती, लायो इत धनु यज्ञ लखन।
पद रज तारि अहिल्या रघुवर, जनक शोक नश बाहु नखन।
वेद रीति करि ब्याहहिं सुत को, सिय सह जैहौ अवध जखन।
आनँद आनँद आनँद उमड़ी, सुख से सनी त्रिलोक तखन।
हर्षण नृपति कहेउ सुत तिहरे, तिहरेहिं कृपा प्रमोद रखन।

(४२०)

मातु मिलन दोउ बन्धु गये री।

श्याम गौर वपु मरकत सोने, राम लखन श्री मातु मये री।

करत प्रणाम देखि कौशिल्या, हृदय मेलि दृग नेह नये री।

लाल वत्स कहि प्यारेउ बहुविधि, चूँमि बदन सिर सूँघि लये री।

कुशल प्रश्न पूछति लखि आनन, गोद बिठाय प्रीति अघये री।

कौशिक कृपा कदा सुख वरणे, सुनि सुनि अम्ब हर्ष हियये री।

तैसहिं मिलि कैकई सुमित्रा, आशिष लहि मन मुदित भये री।

हर्षण जननि प्रीति का कहियत, शेष महेश थकैं कितये री।

(४२१)

केहि विधि तात ताड़का मारे।

पापी प्रबल सुभुज मारीचहिं, सेन सहित शर केलि सँहारे।

विदित कराल कठोर शम्भु धनु, रावण वाण छुये नहिं हारे।

भंज्यो सोई चाप अहह कत, सकल अमानुष कार्य तिहारे।

कौशिक कृपा घात सब टरिगो, लोचन लखौं कुशल दोउ वारे।

मृदु मुसुकाय भानुकुल भूषण, गुरु की कृपा कहेउ सुख सारे।

खेलहिं मरे बिना श्रम निशिचर, परसत टूट पिनाक महा रे।

हर्षण सबहिं भयो सुख वर्धन, मुनि सँग जान न दुःख कहारे।

(४२२)

हमारे सुखहू के सुख राम।

प्राण प्राण जीवन जिय जी के, निवसत मिथिला धाम।

कबहुँ जननि गृह कबहुँ जनक ढिग, वितर सुखहिं अठयाम।
गाधि तनय कहुँ कुल गुरु साथहिं, सुनत संत गुण ग्राम।
अनुज सखा लै विहरत उपवन, कहुँ क्रीड़त निष्काम।
जनवासे लक्ष्मीनिधि आवत, लखत लहत विश्राम।
कबहुँ वरात सभा कहुँ राजत, जन हिय कीन्हे ठाँम।
मुसुकि चितय सबके चित चोरत, हर्ष बिक्यो बिन दाम।

(४२३)

प्रथम बरात लगन ते आय, आनँद धारा नगर बहाय।
प्रमुदित वसी ताहि ते छन छन, पुर प्रमोद अधिकाय।
नित नव मंगल चित्ता कर्षक, सुर नर मुनिन मोहाय।
पंच धुनी अहनिशि रस वर्षति, मन महँ मोद बढ़ाय।
समय समय पुर जन जनवासहिं, पहुँचत सुख न समाय।
दशरथ निकट देख सुत चारहु, होहिं सुखी सब पाय।
नाम रूप लीला अरु धामा, तन धरि सहज स्वभाय।
जनु जिव अन्तःकरण विराजत, हर्षण हिय हर्षाय।

(४२४)

निरखि भई बलिहार, अली री।
सखि जस राम लखन सुठि सुन्दर, मोहन मधुर कुमार।
तैसहिं भूप संग दुइ बालक, अंग अंग अनुहार।
राम-भरत रँग-रूप वयस में, एक भाँति बुधिवार।
लखन शत्रुहन तथा एक सम, वचन न वृथा हमार।

बोलनि मिलनि हँसनि अरु चितवनि, सब प्रकार सुख सार।
सहसा जानि सकै नहिं कोउ, चितै चतुर नर नार।
हर्षण यहि विधि पुर की वामा, बात करहिं रिझवार।

(४२५)

सखि धनि धन्य हमरे भाग।
जो विधि जनक पुर वास दीन्हो, प्रीति सिय पद पाग।
लहि सुखद सुन्दर श्याम दर्शन, ताहि के रस राग।
अब लखब सीता राम ब्याहहिं, जन्म फल जग जाग।
उर उमगि मंगल गीत गइहै, मज्जि प्रेम तड़ाग।
गुनि सुभग निज सम्बन्ध तिनते, नेह नव नव लाग।
पुनि परशि तिन्ह तन बात करिहैं, छोड़ि जप तप याग।
पद सेव हर्षण जन्म जन्महिं, चहहिं शिव ते माँग।

(४२६)

अलि जेहने सीताराम की विवाह की शुभ बेरिया ऐली,
तेहने हमरा खुलिथिन सब विधि भाग हे आनँद आनँद बाढ़ि।
मणि मंडप में आसन राजै, दुलहा दुलही कर कृत काजे,
लजि लजि अधो नजरिया कैली,
मोरवा मोरिया सेहरा लहरनि लाग हे॥ आनँद आनँद बाढ़ी॥
दशरथ संगे सब बरियाती, बैठे सुर मुनि सकल जमाती,
सर्वस वारे भोरे भैली,
लखि है बनरी बनरा करि बड़ राग हे॥

गइहै मंगल मिथिला नारी, नचिहै नभ सुर तिय सुखकारी,
प्रेम पगी भरि भावहिं गैली,
दुंदुभि दैहै देवता जय जय जाग हे॥ आनँद आनँद॥
वरषि सुमन सेवा सुख सरिहै, द्विज श्रुति वंदी विरद उचरिहै,
हर्षण हर्षित सब कछु पैली,
बाजा बजै दुअरिया स्वर में पाग हे॥ आनँद आनँद॥

(४२७)

नारद विधि की दीन्ह लगन को लाये।
बाँचे सभा शतानंद सरसे, पुरहु ज्योतिषी प्रथम सुनाये॥
अपर विधाता अहै गणक गण, लोग कहैं नहि भेद लखाये॥
ब्याह पूर्व जो कृत्य समय शुभ, दूनहु दिशि मुनिवर बताये॥
अगहन शुक्ल पक्ष तिथि पंचमि, पाणि ग्रहण गो धूलिहिं गाये॥
सुनि सुख सनी समाज भूप दोउ, बजन लगे वर वाद्य बधाये॥
उत्सव मगन बरात घराती, सहजहिं आनँद सिन्धु समाये॥
हर्षण भूपति भाग अवधि गुन, सुरहु सिहात सुमन झरि लाये॥

(४२८)

दिय फल दान पठै नृप नागर।
लक्ष्मीनिधि लै गये अयोध्यहिं,
जहाँ वसत दशरथ सुख सागर॥पठै॥
किये समर्पित सादर लीन्हे,
प्रमुदित श्री रघुवंश उजागर॥पठै॥

विनय मान दै गौतम पुत्रहिं,
प्यारे लक्ष्मीनिधिहिं गुणागर॥पठै॥
सुखद सविधि सतकार किये बहु,
हर्षित हृदय प्रेम दृग गागर॥पठै॥
तिलक चढ़ावन कीन तयारी,
वदत वाद्य बहु विधि भल लागर॥पठै॥
सुख महँ सने अवधपुर वासी,
सिगरी जननि नेह नव पागर॥पठै॥
हर्षण हर्ष न पुरहिं समाई,
निकसि निकसि सो दश दिशि बागर॥पठै॥

(४२९)

अवधहिं आनँद अति उमगाया रे, लखु मोरी सजनी।
त्रिभुवन-तिलक को तिलक चढ़त है,
ऋषि मुनि सिगरे वेद पढ़त हैं।
नभ विमान दै दुंदुभि देवहु,
सुभग सुमन झरि लाया रे॥लखु॥
गावहिं गीत मनोहर बयनी,
पुर रमणी राजित चित चयनी।
बाजा बजै दुआर विविध विधि,
श्रवण सुखद सरसाया रे॥लखु॥
बन्दी विरादवली बखानै,
बीच बीच जय जय धुनी तानै।

नाऊ वारी भांट निछावर,

पाय प्रमुद पुलकाया रे।।लखु।।

श्याम स्वरूप मदन मन मोहन,

तेहि पै भूषण वसन सुसोहन।

राजकुँअर कल कृत्य करत महँ,

हर्षण के मन भाया रे।।लखु।।

(४३०)

रघुकुल टीको कियो सखि टीका।
देखि ताहि सुर नर मुनि मध्यहिं, कहहु कवन नहिं बीका।।
घर घर उत्सव घर घर मंगल, सबहिं सुहावन ही का।।
चहल पहल रनिवास मच्यो है, लहे आस सब जी का।।
दशरथ विप्र साधु सुर पूजत, दान मान दै नीका।।
याचक बने अयाचक बोलै, जय दानिन कुल लीका।।
पंच धुनी छाई चहुँ ओरहिं, कीन्हे भव रस फीका।।
हर्षण उत्सव मगन नारि नर, गावहिं गुण सिय पी का।।

(४३१)

आज सखी झूमि झूमि नारी नव नव हे।

सोरहौं श्रृँगार किये सोह सब सब हे।।

कमला के तीर माटी खोद फब फब हे।

तासु बनी ब्याह वेदिका जो छब छब हे।।

विरचि कुण्ड हू सु सोह हवन भव भव हे।

मांगलिक कार्य हेतु वेद रव रव हे॥

देवि देव पूजि माँगि तिया तव तव हे।

हर्ष सुखी सिया राम रहै लव लव हे॥

(४३२)

हुलसत हैं हो हर्षण हर्षि हीया॥

सखी सहेली सहचरि लै कै, कमला पूजन जाति सीया॥

उमा रमा ब्रह्माणी प्रगटहिं, जेहि के अंशहि आमि तीया॥

सो सीता कमला सरि पूजति, मागति रामहि प्राण पीया॥

ललना गण के बीच विराजति, नखतन बिच विधु कमनीया॥

गौर कान्ति विद्युत छबि छाजति, वसन विभूषण द्यौतिकीया॥

मंगल गावहिं सुख उपजावहिं, बाजत वाद्य विमोह लीया॥

भरि भरि भाव सोहागिनि सेवैं, जनक लली कहँ धारि धीया॥

(४३३)

मातृक पूजन आज री आली।

शतानन्द उपरोहित आये, कृत्य करावत श्रुति के चाली॥

गणपति गौरि कलश महि पूजत, देवी देव मनाय शुभाली॥

ईश भाव भरि सबको ध्यावत, जड़ चेतन यावत जग जाली॥

लली लाल को मंगल चाहत, दुहुँ दिशि वर्षा आनन्द वाली॥

ब्याह गीत गावहिं पुर नारी, सिय नहछू भै सुन्दर शाली॥

विविध प्रकार बजत बहु बाजे, कलित कोलाहल होत न खाली॥
हर्षण नभ विमान मेड़रावत, वर्षत सुमन इत्र रंग माली॥

(४३४)

जोहु जनकपुर घर घर मंगल, मंगल मंगल आज, री सजनी।
अगहन शुक्ल पंचमी शुभ तिथि,
अहै अमित सुख साज, री सजनी.॥
लै बरात कौशल पति ऐ है, पुत्र बिवाहन काज री सजनी.॥
द्वार चार समधी सम्मेलन, मंडप सोह समाज री सजनी.॥
देव बजाय निशान सुमन झरि,
नृपन प्रशंसहि लाज री सजनी.॥
पाणि ग्रहण गोधूली बेला, होइहि मुनि मत याज री सजनी.॥
पँच धुनी छाई चहुँ ओरहिं, आनँद आनँद भ्राज री सजनी .॥
हर्षण देखि विवाह की झाँकी,
रसिहैं युग रस राज री सजनी.॥

(४३५)

आज अवधपुर मायन, मंगल बजत बधावा।
राम लला की नहछू, होत सबहि सुख छावा॥
मंडप बीच कौशिला, राजति राम लै गोदी।
चार सखी शिर अंचल, दीन्हे अतिहि प्रमोदी॥
नाउन नखहिं उतारी, न्हाये तीरथ पानी।
गावहिं पुर तिय गारी, राम सकुचि मुसकानि॥

वसन विभूषण पहिरे, शोभा जगत ते न्यारी।
दै वैवाहिक साजहिं, लहे नेग नेग हारी॥
बाजन बहु विधि बाजै, ब्राह्मण वेद बखाने।
बन्दी विरदहिं वरणै, जय जय धुनिहू ताने॥
चहल पहल पुर छायन, शान बान गर्वीली।
राम बरात सुहायन, हर्षण सुठि सुख शीली॥

(४३६)

अब जात बरात बुलावन री।
किये बनावहि बाजत बाजे, पंच धुनी मन भावन री॥
कनक कलश शिर लिये सुआसिन, चन्द्रवदनि छबि छावन री॥
पहुँचि वास वर विनय सुनाये, श्री पग धारिय पावन री॥
सुनतहिं परी निशानन चोटै, आनँद उर उमगावन री॥
रामहिं दूलह वेष बनायो, सुभग सुआसा चावन री॥
कहि न जाय सो वेष सुघरता, कोटि काम तरसावन री॥
हर्षण रत्न पालकी बैठे, राम रसहिं वरषावन री॥

(४३७)

परिछन करति कौशिला रानी।
लोक रीति कुल रीतिहीं अनुसरि, गीत वाद्य वर बानी॥
बनरा वेष विलोकि पुत्र को, आनँद मगन महानी॥
आरति करि अंचल मुख पोंछति; चूमि कपोलनि पानी॥

दीठ लगै नहिं डरति मातु मन, तृण तोरति हित आनी॥
पुनि पुनि राई लोन उतारति, भरि वात्सल्य सुहानी॥
रंगनाथ कुल इष्ट मनावति, करि वर विनय विधानी॥
श्याम स्वरूप सुहावन देखी, नजर न लगे लुभानी॥
बहुरि वधू-वर कर ते पूजा, करवैहौं सुख सानी॥
हर्षण सेहरा मौर सुहावन, देखत सबै बिकानी॥

(४३८)

सबके मन हर लीन्हो नवल बनरा।
श्याम शरीर केशरिया जामा, फेंटा पीत गले गजरा॥
शिर मणि मौर अलक घुंघुरारी, लहरनि ललित सुभग सेहरा॥
केशर खौर कान कल कुण्डल, छुअत कपोल हरत हियरा॥
चितवनि चारु चतुर चित चोरति, तेहि पै दियो कलित कजरा॥
मुसुकनि मधुर शशी शत आनन, नकमणि लसत पियहि अधरा॥
कर कंकण पद नूपुर राजत, महवर लाल लसत लहरा॥
रथारुढ़ रामहिं लखि हर्षण, भूप-बरात मगन जियरा॥

(४३९)

रथहिं चढ़े रघुनन्दन दुलहा राजि रहे।
स्वर्ण स्वरूप सुमेरू समाना, सुन्दर साज बाज विधि नाना॥
दमकत यान भानु द्युति उलहा॥ राजि रहे॥
नख शिख भूषण वसन सम्हारे, चिलकत देह सुभग छबि वारे॥
नहे अष्ट हय सुभग अतुलहा॥ राजि रहे॥

मनसिज मनहु राम हित हर्षण, अनुपम अकथ भाव भरि छन छन।
रथ बनि सेवन चहेउ स्वभुलहा॥ राजि रहे॥

(४४०)

बनि ठनि चली ब्याह के मण्डप सुख में सानी राम वरात।
पहिरे वसन विभूषण नाना, स्त्रग चन्दन दै मुख में पाना,
हय गय रथहिं चढ़े सब सजि सजि, शोभा मुख ते कही न जात॥
विप्र साधु गुरु सोहत साथा, धनिक वर्ग मन मुदित सनाथा,
चक्रवर्ति बहु नृप संग राजत, जनु सुरपति लै सुरन जमात॥
देखि देखि दिवि दूलह मोही, सकल बरात दृगन पथ मोही,
बजत बाजने बिपुल विविध धुनि, स्वाँग विदूषक करत सुहात॥
मुसकन मधुर विलोक बराती, आनँद सने ब्याह रस माती,
विप्र वेद बन्दी भनि विरदहि, रघुकुल निमिकुल जय सुख दात॥
लखि बरात त्रैलोक निवासी, बने चकित चित सुख के रासी,
विधि हरि हरहु सुरन सब लीन्हे, चढ़े विमान नभहिं मेड़रावत॥
प्रेम मगन सब आपा भूले, बिसरे निज निज लोक अतूले,
बना वेष श्री श्यामहिं लखि लखि, नयन वारि प्रमुदित पुलकात॥
आपुहिं गिनै परम बड़भागी, बनि बनि राम रूप के रागी,
वर्षत सुमन निशान बजावत, सुर तिय नचहिं हर्ष हर्षात॥

(४४१)

सिय प्यारी को बनरा विलोकु सखियो।
हेरि हेरि हियरा दसाय रखियो।

मणि मोरवा औ सेहरा सुहात अँखियो।
कोटि कोटि मदनउ लोभाय लखियो।
चित चोरवा को चेहरा चोराय चहियो।
मधुर मधुर मोहना मोहाय रहियो।
मुसकनियाँ की मधुरी मिठास लसियो।
दोउ दृग दोनमाँ रमाय रसियो।
चितवनियाँ जो चित को फँसाय फँसियो।
जोहि जोहि जियरा जुड़ाय हँसियो।
पद तलवा की ललिया लोभाय दसियो।
वारि वारि तहँवाँ भुलाय वसियो।
अँग भूषण औ वसना अमोल अलियों।
देखि देखि भनुऔं भुलाय भलियो।
हठि हर्षण को हियरा हिराय ललियो।
कहर कहर जियरा करोय पलियो।

(४४२)

बनरा बनि रस-राज अहो मग मिथिला में।
बीचबरात रथहिं पर राजैं, मनसिज मोह अपार अँग अँग अखिला में।
सिर सोने की मौर विराजत, सेहरा लर लहरात लखो मुख अमला में।
जामा जरकसि रंग केशरिया, फेटा धोती द्योति हर्ष कछु चपला में।
छत्र चमर छवि ऊपर छहरति, सुषमा सुख सर सात चुअत भुँइ विमला में।

(४४३)

मनुआ मोहावत आवे, मोहना मधुरवा, काम करोरिया मोहे हे।
केशिया बनि घनि घुँघरार। काम करोरिया मोहे हे।
सिर में मणि मोरिया भल, लहरै लर सेहरवा सोह,
कुण्डल श्रवणवा मजेदार। काम करोरिया मोहे हे।
चारु चितवनिया पैं, लखि लखि गइ बलहरिया,
मोतिया नासा लहरदार। काम करोरिया मोहे हे।
अधर की ललाई मधुमय, पीवति री सेहलिया छलकै,
हर्षण हियरा बलिहार। काम करोरिया मोहे हे।

(४४४)

रघुकुल मणि सिरमौर, सुखद रस रूप सुहायो री।
षोड़ष वर्ष किशोर, वपुष बनरा बनि भायो री।
लाजत काम करोर, सुभग श्यामल सरसायो री।
त्रिभुवन प्रिय मुख चंद, छनहिं छन छवि छहरायो री।
तरफरात अठ अश्व, नहे रथ भानु भुलायो री।
तेहि पै राजत राम, कहर पुर माहिं मचायो री।
कनक मणिनमय मौर, सुभग सेहरा झलकायो री।
कर कंकण कमनीय, सुपल्लव आम बँधायो री।
जरकसि जामा पीत, कलित फेंटा फबि पायो री।
धोती परम पुनीत, बिअहुति द्युति दमकायो री।
अँग अँग भूषण भूष, छटा अनुपम जग जायो री।

मुसुकि मन्द मन हरत, सुचितवनि चोट चलायो री।
महि पताल वर व्यौम, नगर नर नारि लुभायो री।
विधि हरि हर सह शक्ति, लखत बिन मोल बिकायो री।
ब्रह्म ज्ञान गो भागि, देखि दूलह छबि छायो री।
हर्षण हिय हर्षाय, सिया को ब्याहन आयो री।

(४४५)

देंखो बाजा बजै दोहुँ ओरिया, बरतिया आई री।
आहा वर्षै सुमन सुख बोरिया, सुरहु सरसाई री।
सुनि सिय मातु सु आसिनि बोली, परिछन साज सजी अनमोली,
चली आरति करन बनि भोरिया, सखिन सह माई री।
पहिरे वरन वरन वर चीरा, अँग अँग भूषण सजे शरीरा,
कंकन किंकिन नूपुर शोरिया, गजहिं गति दाई री।
शची शारड़ा सुर तिय सोहीं, करहि गान कल कंठि विमोही,
उमा रमा ब्रह्माणी चोरिया, मिली रस छाई री।
आनँद कन्द बना अवलोकी, हर्षण हृदय भूलि भव ओकी,
परमानन्दन सनी सह गोरिया, सिया की माई री।

(४४६)

विधि हरि हर के मन भावन की।
पहुँची द्वार बरात बनी भल, वाद्य बजैं चित चावन की।
मंगल गान करहिं नव नारी, कोकिल कंठ लजावन की।

श्रुति मुनि विरद बन्दि बहु वरणत, जय धुनि हिय हुलसावन की।
लीन्हे कलश सुआसिन ठाढ़ी, परिछन तिय गन गावन की।
श्री निधि रथते राम उतारे, प्रेम पगे उर लावन की।
रत्न पालकी पुनि पधराये, छत्र चमर छवि छावन की।
हर्षण आरति करी सुनैना, प्रीति परम प्रिय पावन की।

(४४७)

दुलहा देखि दुआरी, अली मन मोहि गयो हमरा।
माथे मौर कान कल कुण्डल, सेहरा बहत बहार अखण्डल,
नक मौक्तिक हलकारी।। अली मन।।
पहिरे पीत जारकसि जामा, उदित भानु छवि धोति ललामा,
चरण महावर धारी।। अली मन।।
ब्याह विभूषण अँग अँग सोहै, शशि शत आनन सबहिं विमोहै,
कोटि काम मदगारी।। अली मन।।
मुसुकनि मधुर विलोकनि बाँकी, मूरति मति मन मोह लला की,
सुख सुषुमा श्रृँगारी।। अली मन।।
नभ अरु नगर वाद्य बहु बाजत, बन्दी विरद वितान बखानत,
विप्र वेद विधि चारी।। अली मन।।
मंगल गान करहिं भल भामिनि, व्योम विमान सोह सुर-कामिनि,
वर्षत सुमन अपारी।। अली मन।।
गुरु निदेश नृप सुवन समेता, करत द्वार पूजा चित चेता,
हर्षण जय जय कारी।। अली मन।।

(४४८)

बनरा बीच बरात अली री।

सुख सुषुमा सौन्दर्य को सागर, नखत मध्य मनु चन्द्र बली री।

मणि मय मौर पीत रंग चपकन, शुचि सेहरा झमकान भली री।

सकुचि द्वार की कृत्य निवाहत, हर्षण धनि आन्दन थली री।

(४४९)

लक्ष्मीनिधि रघुनंदन रे, सखि सुख रस पागे।

भरि भरि भुज हिय लागे रे। सखि सुख रस पागे।

युगल कुँअर करि द्वार की कृत्यहिं, रसे रसहिं सुख कंदन रे। सखि।

श्याम गौर वपु मरकत सोने, जमुन गंग जग बन्दन रे। सखि।

नेह नदी दोउ धार एक मिलि, भई समुद्र स्वछन्दन रे। सखि।

बूड़ि बरात घरात सुरन सह, दश वायु स्पन्दन रे। सखि।

श्याल भाम की मिलनि विलोकत, हर्षत हिय दश स्पन्दन रे। सखि।

व्योम निशान बजाय देव गन, वर्षि सुमन बिन द्वन्दन रे। सखि।

मुनि मत वर को कर गहि श्रीनिधि, मंडप गवने मंदन रे। सखि।

(४५०)

राम रसिक सुख सागर हे, कोउ नजर न मारे।
कोटि काम छबि आगर हे, कोउ नजर न मारे।
शत शत चन्द्र लजावन आनन, नख शिख नव नव नागर हे।
कल कपोल चिक्कन सुख दायक, काह कहै कवि कागर हे।
चितवनि चारु चतुर चित चोरत, श्रवनन लौं दृग बागर हे।
अरुण अधर मुसुकनि मधु मधुरी, चुअत सुधा मुख गागर हे।
लहरि लहरि ललचावति पीवति, नक मौक्तिक रस पागर हे।
कानन कुण्डल गिरि गंडस्थल, जनु युग मीन खेलागर हे।
हर्षण बनरा बनि मन मोहेउ, श्री रघुवंश उजागर हे।

(४५१)

प्यारे पियरवा रसहिं रस आवो।
मृदु मुसुकावत रस उपजावत, आनँद वारि बहावो।
कहती अलियाँ लली की गलियाँ, सादर सुख न समावो।
अवधी छैला ब्याहहिं कैला, त्रिभुवन जियहिं जुड़ावो।
बड़की जननी छोट की भगिनी, नाम तो तनिक सुनावो।
विधि है इतकी कहु अब द्रुत की, गारि गान पुलकावो।
हर्षण हर्षे चित को कर्षे, बनरा मंडप जावो।
सुनि सकुचाई सिरहिं झुकाई, राम चलत छबि छावो।

(४५२)

धनि धनि तोरी भाग, सुनैना रानी।
कोटि मदन मूरति मन हारी, लहेउ जमाई याग।

उमा रमा शारद सब ललचैं, लखहिं भरी अनुराग।
हर्षण सुख सनि सेवहु बनरा, सिय को अचल सुहाग।

(४५३)

बहिनी विलोकु बना हिय हरिया।
रस्यो रसहिं रस रस चित चोरत, मंडप जात सबहिं सुख सरिया।
स्वर्ण मणिन की मौर बिराजत, लहरत सेहरा छत्र चमरिया।
सकुच विवश कछु सिर नत कीन्हे, दोउ दृग कजरे करत कहरिया।
महिसुर शान्ति पढ़तकवि विरदहिं, गानकरहिं सुर-पुर नव नरिया।
भूमि अकाश बजत बहु बाजे, वर्षहिं सुमन देव झर झरिया।
होत कोलाहल नगर नभहु नव, उमगेउ आनँद सिन्धु अटरिया।
जनक सुवन कर गहि सिंहासन, दीन्हेउ हर्षण मुनि मत धरिया।

(४५४)

मंडप बीच सिंहासन सोहे।
दूलह वेष राम रघुनन्दन, सुर नर मुनि सब के मन मोहे।
पाद्य अर्घ अरु लहे आचमन, पूजित भये यथा विधि छोहे।
हर्षण आरति हरण आरती, भई भूलि तन छबि दृग दोहे।

(४५५)

सीता वर सुख कर रस धर की, लागै भलि आरती दुलह वर की।
शुचि श्यामल सुगात जामा पीत भल भात, मौर सुभग सम
सूर्य के सोहात, सिर सेहरा लहरन लर की॥

मुसुकत मन्द मन्द अमिय अनूप, जनु जन जिय सीचैं बनि रस रूप,
चितवनि करति कहर कर की॥

नभ सुर वृन्द वरषैं झरि झरि फूल, दुँदभि बजाय कहि जय
सुख मूल, लखि लखि हर्षण हिय हर की॥

(४५६)

सुनि मुनि आयसु सुभग श्रृँगारी।
मुदित मातु सब सखिन बोलाई, सीतहिं सविधि सँभारी।
मंगल पढ़ि त्रैलोक तिया जे, कहीं एक स्वर सारी।
रवि शशि पंच भूत रह स्थिति, गंग जमुन की धारी।
हर्षण विधि हरि हर जग जबलौ, सृष्टि रहै जन वारी।
सिय अहिवात अचल हो तबलौ, आशिष इहै हमारी।

(४५७)

जग जग ज्योति जगावति सीता।
शारद शत शशि विजित सुबदनी, लाजहिं लक्षलक्ष्मि तिय मदनी,
राजि रहीं रमणी विच गीता।

नख शिख भूषण वसन सम्हारी, सुख सुषुमा श्रृँगार अपारी,
आवति मंडप परम पुनीता।

शान्ति पढ़त महिसुर अनुकूले, व्योम विमान देव सुख फूले,
वर्षहिं सुमन सुमंगल धीता।

सुर तिय नर तिय गीतहिं गावहिं, वाद्य बजत बहु सुख सरसावहिं,
पुर अरु व्योम कोलाहल प्रीता।

निरखि सियहिं सुर नर मुनि बन्दे, पूरण काम राम आनन्दे,
दशरथ दिवि सुख लहेउ अतीता।
लोक वेद विधि मुनिन कराई, सुख प्रद आसन दिये सुहाई,
बैठि प्रिया प्रियतम चित चीता।
सीता राम परस्पर प्रीति, कहि न जाय मन वाक अतीती,
हर्षण हर्ष हेरि हिय हीता।

(४५८)

सुभग वितान तरे सजनी, दुलहा छबि छहराय रहे।
पियत नयन पुट रूप सुधा सब, पै प्रिय प्यास बढ़ति बहु लव लव,
सबहिं अपनपौं लाय रहे॥
धनि मिथिलेश सुनैना रानी, कर गहि कुश जल कन्या पानी,
रामहिं सौंपि सुहाय रहे॥
प्रमुदित देव बजाय नगारा, झरि झरि वर्षहिं सुमन अपारा,
जय जय शब्द सुनाय रहे॥
मंगल गान गगन गृह माहीं, वन्दि विरद द्विज श्रुतिहिं सुनाहीं,
आनँद अतिहिं अघाय रहे॥
जनक सुनैना पाँव पखारत, श्रीनिधि सिद्धि सहित अनुसारत,
परमानंदहिं पाय रहे॥
ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिदेवा, इन्द्र वरुण रवि चन्द्र जितेवा,
त्रिभुवन जनकहिं गाय रहे॥
रसमय राम सिया की जोरी, आनँद उमड़ि दियो चहुँ ओरी,
हर्षण हिय हर्षाय रहे॥

(४५९)

शाखोच्चार किये मुनि नायक।

गुरु वशिष्ट निमिकुल उपरोहित, निज निज पक्ष बखान विधायक।
लै अव्यक्तहिं राम सिया लौ, वर्णन वंश भयो भल भायक।
हर्षण दोउ दिशि आनँद बाढ़यो, सुनि सबहिं श्रवणन सुख दायक।

(४६०)

बन्ना बन्नी वने आज, अँग अँग भूषण भव्य भ्राज,
सिया संग सोहे आसन रघुवर रसिया।
जनक अजिर वर बन्यो है वितान, करत क्रिया दोउ व्याह की सुजान,
सकुचि सकुचि ताकै इक इक हिय हर लसिया।
मौर मौरी शिर सुभग सम्हारे, ज्योति जोती मिलि रवि मद मारे,
लहरि लहरि लोरे सेहरा सरबस फँसिया।
लखि सुर हर्षें हिय हनहिं निशान, वरषि सुमन जय जयति बखान,
कहर करति शोभा हर्षण हिय में धँसिया।

(४६१)

लसत लली अरु लाल, आज अनुपम अरे।
बनी बना के वेष, मुदित मंडप तरे॥
छहरति छवि सुखसार, चारु चहुँ दिशि भरै।
शोभाकन लहि काम, कोटि तन कहँ धरै॥
मोतिन की शिर मौर, गुच्छ गुँफित गसै।
सेहरा लर लहरात, ललित लोलत लसै॥

अलका वलि अलि आय, वदन पंकज पिये।
कुण्डल मकर किलोल, गण्ड जल में जिये॥
लोचन ललित बिशाल, लाज लाजित अहैं।
चितवनि चित्त चोराय, करन वश में चहैं॥
नासा-मणि अभिराम, अधर रस में रसी।
विधुकर निकर सुहास, दंत दाड़िम दसी॥
अधर शोणिमा शुभग, बोल पुष्पन झरैं।
ठोढ़ी अनुप उदार, अकथ छवि कहँ धरैं॥
तिलक खौर भल भाल , सबहिं सुख सनि दियो।
पानि सरोज प्रलम्ब, मुदरि कंकन कियो॥
चरण महावर धार, नवल नूपुर रवै।
श्याम शरीर सुहात, अनुप अतिशय फबै॥
जामा जरकसि पीत, फबत फेंटा कटी।
अँग अँग लखि मन मोह, नचत बुधि वर नटी॥
करत व्याह की कृत्य, युगल उर बिच बसे।
बिबुध बजाइ निशान, कहत जय जय रसे॥
वरषि प्रसून प्रमोद, हेरि हर्षत हिये।
बाँचहि द्विज वर वेद, वन्दि विरदहिं किये॥
गावहिं मंगल चार, सरसि सुर-पुर तिया।
ब्रह्मा विष्णु महेश, ललकि लोचन लिया॥
आनँद अकथ अथाह, अनुप त्रिभुवन भर्‌यो।
जनक सहित निज नारि, स्वसुख सागर पर्‌यो॥

लक्ष्मीनिधि सह सिद्धि, मगन मोदहिं महा।

सीता राम स्वरूप, पियत प्रमुदित अहा।।

मिथिलापुर आनँद, शेष श्रुति का कहै।

विधि हरि हरहु भुलान, हरषि हरषण लहै।।

(४६२)

तनिक तो विलोकु वहिनिया मोरी हे, बन्नी बन्ना बने सीताराम,

भेलथिन मिथिला रस बोर।।

सुख सुषुमा श्रृँगार की मूरति, छहरति छवि रस मय रस पूरति,

उपमा ओछी कोटि रती काम, सोहे सेहरा मौरी मौर। बन्नी।

व्याह कृत्य कर दुलही दुलहा, सकुचत शिर नत उत्तम कुलहा,

सोहे सब के सर्व सुख धाम, सुन्दर शोभा श्याम गौर। बन्नी।

विधि हरि हर सह सुरन लुभाये, वर्षि सुमन कल कीरति गाये,

हर्षण बीके वर पै बिना दाम, बाजा बाजे घर घोर। बन्नी।

(४६३)

सखि नीको लगै रघुरइया।

सुन्दर बदन कमल दल लोचन, पेखत मुख मुसुकइया।

व्याह विभूषण अँग अँग साजे, सेहरा लर लटकइया।

कोटि मदन मूरति न्यौछावर, प्रेमिन मन हर्षइया।

जनक लली निज अँकहिं लीन्हे, दै भाँवरि सुख दइया।

लक्ष्मीनिधि प्रिय परसत लाजा, हर्षत लोग लुगइया।

त्रिभुवन जै जैकार करत सब, पढ़त वेद द्विजरइया।

मंगल गान बजत बहु बाजे, बरसत सुमन सुरइया।
"हर्षण" आनँद उमगि चल्यो चहुँ, तन मन सुधि बिसरइया।

(४६४)

भाँवरी दिव दम्पति रस बोर, भरत हैं नव नेहन की कोर।
श्यामा श्याम सुभग प्रति रूपा, जगमगात मणि खंभ अनूपा,
शोभा अकथ अथोर।
उपमा कहहुँ हृदय सकुचाये, मनहु मदन बहु रूप बनाये,
लखत विवाह विभोर।
सुर नर मुनि सब त्रिभुवन वासी, भये मगन मन आनँद राशी,
पुलकहिं हृदय हिलोर।
पुर अरु व्योम वाद्य बहु बाजे, वरषि सुमन सुर जय जय गाजे,
वेद धुनी चहुँ ओर।
सुरतिय पुरतिय मंगल गावैं, सुनि हरि भक्त परम सुख पावैं,
निरखि घनहिं जनु मोर।
सीता राम मनोहर जोरी, जनु घन दामिनि छवि तेहिं ठौरी,
जन-हित वर्षि बेजोर।
मिथिला भाग कहै को पारी, हर्षण हर्ष सकल नर नारी,
निरखहिं छवि तृण तोर।

(४६५)

ललित लली को भाग री सजनी, निरखहु नव अनुराग री सजनी।
मधुर मधुर मन मोहन दुलहा, छवि की खानि सूर्य कुल उलहा,
मिलेउ महा रस पाग। री सजनी॥

लै कर कमल सुभग सिन्दूरहिं, कहि न जाति सुषुमा सुख पूरहि,
सिय शिर भरत सोहाग। री सजनी॥
जनु अहि अमृत हेतु चन्द्र कहँ, जाइ निकट भरि भाव हीय महँ,
अर्चत अरुण पराग। री सजनी॥
नभ ते देव सुमन बहु वर्षत, हुलसि हृदय मन मोदहि परसत,
जय कहि दुंदुभि दाग री। री सजनी॥
मंडप मंगल गावहिं नारी, तैसहि देव तिया नभ चारी,
सकल सुकृत फल जाग। री सजनी॥
सीता राम विवाह भयो भल, चमत्कार्य परिपूण कलित कल,
कहहिं देव नर नाग। री सजनी॥
हर्षण हर्षि व्याह वर झाँकी, युगल सुखहिं चाहति बुधि बाँकी,
मंगल मंगल माग। री सजनी॥

(४६६)

निमि नृप वशिष्ठ आयसु पाय।
कुशकेतु कन्या माण्डवी जो, दीन्ह भरतहि भाय॥
श्रुतिकीर्ति माण्डवि भगिनि छोटी, रिपुहनहिं दिय लाय॥
सिय लघु भगिनि सुभग उर्मिला, दिय लखनहिं उछाय॥
राम विवाह भयो भल जेहि विधि, लोक श्रुति मत पाय॥
तैसहि किय मिथिलेश मुदित मन, पगे प्रेम अमाय॥
चारहु वर सह चार कन्यका, मधि मंडप बुझाय॥
हर्ष मनहु जिउ चारि अवस्था, विभुअन सह सोहाय॥

(४६७)

कोहवर कक्ष चलीं गज गामिनि।
दूलह दुलहिन दिव्य साथ लै, रहस रसी रसमय भल भामिनि॥
शची शारदा रमा भवानी, सारी सरहज अति अभिरामिनि॥
छत्र चमर शिर ढारहिं प्रिय पर, आगरि केलि कला कलकामिनि॥
रस रस चलत राम रस भीने, सिय संग सोह सुखद घन दामिनि॥
गावहिं गीत मधुर अलबेली, वाद्य बजत अनुहारत रागिनि॥
सुर प्रसून जय कहि झरि लावै, आनँद्र अमित बढ़ाय सुधामिनि॥
हर्षण हास विलास पिपासी, नेह नमी नव नवला नामिनि॥

(४६८)

आबू आबू आबू पहुना कोहबर हमार हे।
कोहवर गलिया सुख की शलिया, सोह सुख सार हे॥
चारों दुलहा चारों दुलही, करु नेग चार हे॥
प्रीति पागे सुख में साने, बनी बना पार हे॥
देवी पूजू नौशय बबुआ, भाव भल धार हे॥
जो जो जिय में चहिहौ पूजी, असिया तुम्हार हे॥
सारी सरहज सँगे बसिया, हँसिया व्यौहार हे॥
सुखी होले हर्षण हियरा, झाँकी निहार हे॥

(४६९)

सुनहु ललित लालन नव दुलहा, अति उदार नृप छौना री।
नेग हमारो द्वार छेकाई, देहु रसिक रस भौना री॥

नेग दिये बिन जान न पैहौ, करहु यत्न तुम जौना री॥
सिया सखी सब यहाँ बिराजै, नहिं तिय ताड़क तौना री॥
जौ पै पास होय कछु नाही, देवहु शान्ति सुहौना री॥
हमरे भइयहिं भाम बनावहु, वरषै सुख सरसोना री॥
मिथिला अवध जोरि दृढ़ नाता, लूटहु लाभ ललौना री॥
हर्षण विहसहिं सरहज सारी, सकुचहिं नृपति खिलौना री॥
दोहा- कोहवर कक्षहिं पहुचि के, गावहिं मंगल गीत।
लोक रीति लागी करन, नवल नारि प्रिय प्रीति॥

(४७०)

पावहिं लाल लली लहकौर, सखिया हँसहि हँसावै री।
रसे रसहिं रसिया सिरमौर, रसि रसि रस वर्षावैं री।
सिय की ओर शारदा सोही, राम ओर गिरिजा कर छोही
सीखहि सिखवहि सुख रस बोर॥
हिमजा हर्षि हेरि मुसुकाई, रामहिं कछु कहि पाठ पढ़ाई,
सो सिय मुख दै कवल चचोर॥
शारद सिख सुनि सिय सकुचाई, पियहिं दिखाय आपु लिय खाई,
हँसी ताल दै तिया अथोर॥
हास विलास विविध विधि छायो, आनँद अमित उमगि उमड़ायो,
पी पी अलिगण होहिं विभोर॥
जेती सारी सरहज नारी, रसमय राम रूप रिझवारी,
लखि लखि ललचहिं तृण को तोर॥

शची शारदा रमा उमा सब, भूलि गई अपने अपने धव,
मोहि लियो मन मोहन मोर॥
कोहवर कला कहै को गाई, रहस रीति सखियन सुखदाई,
हर्षण लखै कृपा की कोर॥
दोहा- ठुठुकि रहे कस लाल तुम, वाती मेरवहु नाहिं।
नवल नेह लहिहौ सुखद, अनत आस भगि जाहि॥

(४७१)

मेरवहु वाती सुखद सलोने।
वर दुलहिन की आत्म प्रतीकी, ये दोउ बाति ज्योति नृप छौने॥
यहि को अर्थ स्व सरबस आत्मा, मिलवहु सिय के आत्म अयोने॥
वाति मेराये सुख बहु वर्धी, अकथ अगाध अनूप अहोने॥
दम्पति रसमय बने रसिक वर, पीहौ रस नित भरि भरि दोने॥
लाल ललिहिं मिलि जब इक होइहौ, तब रसिकेश्वर पूरण भौने॥
परम आत्मा परम पवित्रा, लहिहौ पद पर ब्रह्म पटोने॥
सुनि सखि वचन मंद मुसुकावत, हर्षण हेरि हृदय रस बोने॥

(४७२)

सुनि सखि वचन सकुचि मुसुकाई।
चितवनि चारु चतुरि चित चोरति, दीन्ह दिव्य दोउ ज्योति मिलाई॥
मेरवत वाती दुलहहिं देखी, कोहवर तिय आनन्द अमाई॥
सीताराम लखहिं युग जोरी, वाणि रमोमा मंगल गाई॥
समय समुझि सुर सुमन सुवर्षहिं, जय जय दुंदुभि गगन बजाई॥

परम प्रीति पगि श्यामा श्यामहु, एक होय दुइ रूप दिखाई॥
दम्पति आत्म एक रस धारा, रसिक जनन कहँ दीन डुबाई॥
सो सुख सुमिरि सुमिरि सुध भूले, हर्षण हेरि हेरि हर्षाई॥

(४७३)

कहहि लाल का नेग लहैंगे।
जो पै लक्ष्मी चाह चतुर हिय, जेहिं ते सुख समृद्धि बहेंगे॥
तो पै लक्ष्मीनिधि गृह देवै, करहिं वास मन मुदित रहेंगे॥
हर्षण सिद्धि सरिस सुख भोगिहैं, लहिहै जो जो मनहिं चहेंगे॥
दोहा–हँसि हँसाय बहु द्रव्य दिय, हय गय रतन हजार॥
राम रूप पर वारि सब, भूलो सुधि सब नार॥

(४७४)

बनी बना दोउ चतुर चितैरी।
चौसर खेलत भरे उमंगन, छबि श्रृंगार समुद्र जितै री॥
कोहवर कक्ष कलित कर कंजन, नृत्यत पासा नेह नितै री॥
मुसुकि मुसुकि कछु कहि कहि मधुरे, चलत चाल चित चोर कितै री॥
गुण गण गरिमा गति गर्वीले, सीताराम स्वरूप हितै री॥
इक एकन की गोटी मारत, पट्ट्ट पट्ट्ट पटु पीट तितै री॥
खेलत खेलत खेलहि हारे, राम रसिक रघुवीर उतै री॥
इत सखि जय जय जानकि बोलें, हर्षण हेरत श्याम सितै री॥
दोहा– युगल केलि चौपर लखहिं, सारी सरहज वाम।
प्रेम पगी प्रमुदित परम, मन क्रम वचन अकाम॥

(४७५)

कोहवर स्वाँग रची सिधि सजनी।
एक सखी कहँ शान्ति बनाई, नाटक निपुण जो निपट निमजनी ।।
सो सखि कहति श्याम सो भैया, करुणस्वरहि सुख स्वार्थनिमजनी ।।
तुम्हरे भाम जगत जटाधारी, तिन संग मोहि न भावत रजनी ।।
तुम सर्वज्ञ सबहिं सुखदायक, कहहुँ विचार स्वसुख के कजनी ।।
श्री निधि रूप देखि मैं मोही, तिनहिं वरौं हठि हेरि सुयजनी ।।
आपहु उन कहँ भाम बतावत, जानि योग होइहैं सुख भजनी ।।
हर्षण हँसी सबै पुर वामा, मुरति राम सकोच सु छजनी ।।
दोहा–यहि विधि कोहवर भवन महँ, लीला विविध प्रकार।
वर दुलहिन सुख हेतु सिधि, करहि अपनपौ वार ।।

(४७६)

कोहवर वास बसे मन के बसिया।
श्री सियवर सिय दूलह दुलही, राजि रहे रस के रसिया ।।
करि श्रुति रीति सबहि सुख सारत, सिधि सेवति बनि के दसिया ।।
हास विलास रहस रस राचे, मोहत मन फँसि के फँसिया ।।
यहि विधि चौथी छूटन वासर, आयो आनँद के असिया ।।
हवन कृत्य गुरु वरन कराई, लोक वेद विधि के तसिया ।।
व्याह विधान भयो भल पूरण, कहहिं देव जय जय जसिया ।।
दुंदुभि बजति सुमन झरि होवति, हर्षण हिय हसि के हँसिया ।।

दोहा – चारहु दुलहा दुखहरण, सुख स्वरूप सरसाय।।
करत कलेउ चोर चित, मन मोहन मुसुकाय।।
मधुर यन्त्र लै नारि गण, गावहि गारि रसाय।।
सुनि सकोच हिय रस रसे, पावत लाल लुभाय।।

(४७७)

बनि बनरा मधु रस बोर, रसमय रसिक लला।
पावहुँ व्यँजन जो कछु आगे, प्रीति परख प्रिय मोर।।
जेहि मुख अमृत अधरहिं चूवत, शारद शत शशि थोर।।
तेहि कहँ काह अलोन सलोना, बिन विधि भोजन खोर।।
भाव के ग्राहक भाव के भूखे, भावहिं हृदय हिलोर।।
अस कहि सिद्धि नयन भरि वारी, परसति बनी विभोर।।
नित्य नेह नव नव लखि रघुवर, पावत चित को चोर।।
हर्षण सिधि की भाव भंगिमा, परुसब रस को घोर।।

(४७८)

करत कलेउ कुअर दशरथ के, अलिगन गावहिं गारी।
व्यंजन विविध भाँति को वरणै, षट रस चार प्रकारी।।
श्रवण सुनत ससुरार की गारी, प्रीतम प्रेम पुजारी।।
प्रेम पगे परि पूरण पावत, सात सकार सोहारी।।
मृदु मुसुकात मधुर मन मोहत, मोहन मदन मथारी।।
चितवनि चतुर चोरावत चित्तहिं, चतुरि चातुरी चारी।।
लखि लखि ललना लोने लालन, लूटहिं लाभ लुभारी।।

देव देव तिय दुहुँ दिशि देखत, दीन्ह दिव्यता वारी।।
एक सखी कह सुनहु श्याम जी, शान्ता भगिनि तुम्हारी।।
राउर प्रेमी साधु संत पै, रहति अपनपौ हारी।।
साधु स्वभाव जहाँ लगि जग में, सबहिं शयन सुखकारी।।
संत-सार तेहिते तुम काहीं, कहहिं सबै श्रुति चारी।।
आपहु पगे रहत भल भामन, भगिनि नेह अपारी।।
अति उदार ननदोई मोरे, प्रीति रीति जग न्यारी।।
सिद्धि कुअरि की सुनत चतुरता, चितै राम हिय हारी।।
हर्षण हर्षि हृदय हुलसावत, बहे रसहिं की धारी।।

(४७९)

बोल बना भयो काहे कारे।
मैया गोरी बापहु गोरे, गोरे रिपुहन लखन गना।।
यहि को कारण कहि समुझावों, जस जस होवै बात छना।।
जानि परत कछु भेद भयो है, तेहि ते शंकित जगत जना।।
हम नहिं कहिहैं कतहुँ जाय जग, केवल जानन चाह घना।।
अब तो हमरे भैले सर्वस, सिय जू से करि के व्याह पना।।
राउर दोषहिं गुनिहै भूषण, चन्द्र कालिमा यथा भना।।
हर्षण धीरे कहहु हमहि ते, तुम सत वादी वंश घना।।

(४८०)

रघुवर सुनिये बड़ी बड़ बारियाँ।
एक बात हम तुमसे पूँछहि, सत्य गिनहु गुण गारियाँ।।

होत सबन सम्बन्ध जाति में, लोक वेद विधि कारियाँ।।
श्रृंगी ऋषिहिं दियो कस भगिनिहिं, निर्धन द्विज जटा धारियाँ।।
कीधौं लै भागे सोई बाबा, की शान्ता सँग चारियाँ।।
जनि छिपाव कीजै प्रिय प्यारे, रघुकुल वंश विहारियाँ।।
सुनत वचन मुसकाय के रघुवर, मोही सव निमि नारियाँ।।
हर्षण वारि गई सब अपनो, पूँछव सुनव बिसारियाँ।।

(४८१)

लाल तुम काहे को ताड़क मारे।
कोटि काम कमनीय तुमहिं लखि, मोहि गई विधवा रे।।
तेहि के दोष काह कहु नौशे, जेहि ते वाण प्रहारे।।
दोष अहै तिहरी सुन्दरतहिं, चितवनि मुसुकनि कारे।।
जो कर्तव्य बन्यों नहिं तुमते, पौरुष-दया बिना रे।।
तो करि क्रोध नारि को हनिवो, उचित न तुमहिं पियारे।।
नारि बधे को पाप मिटैगो, करहु जो यत्न विचारे।।
हर्षण सिय पद धूरि धरहु सिर, अतिशय प्रेम पसारे।।
दोहा- असुर मारि थापहिं सुरन, रघुकुल सहज स्वभाव।
दुष्ट दलन गहि बाण धनु, रहहिं सजग पति आव।।

(४८२)

लाल मोसे बड़ि बड़ि बाते न झारो।
रघुकुल भेद सबहिं विधि जानौ, याते बहु विधि शेखी न मारो।।
उपजत पुत्र न देखि सगर तिय, देवहिं तपते कीन्ही सुखारो।।

तेहिते तुमड़ी पेट बिआनी, जेहि ते सुत भे दशछे हजारो ।।
पुनि मान्धाता के पितु कुल भे, निज तिय महँ नहिं सुत को सम्हारो ।।
यज्ञ कराय उदर निज जनम्यो, हाँसी की भैं बाती विचारो ।।
सौ सप्त जननि महँ तुम्हरे बाबू, करि न सके पुरुषार्थ प्रसारो ।।
खीर खवाय तुमहिं जनमाये, हर्षण हमरे कुल के न कारो ।।

(४८३)

जनि कछु सोचहु श्याम सलोने।
भयो जो भयो ताहि बिसरावहु, चले कोस को गिनै अयोने ।।
श्री निमि वंश उजागर जग में, सिय संग व्याह भयो सुख भौने ।।
कुल की कारिख धोय गई गुन, उघरो तिहरौ कुल नृप छौने ।।
जनक जमाई सिय के स्वामी, श्री निधि भाम भलो यश पौने ।।
सिद्धि कुअर के ह्वै ननदोई, पूत भये रस ही रस बोने।।
श्वसुर पुरी की गारि पियारी, माख न मानव लाल पटौने।।
हर्षण हम सबहीं बलिहारी, पियहिं रूप रस नयनन दोने।।

(४८४)

पावहु तनि और तनि और मोरे प्यारे।
जनि सकुचाउ मनहिं चित चोरी, हम तुम्हरी नहिं और धर्म धारे।।
षट-नव-पंच रसहिं के भोक्ता, सहजहिं रसिकन राय रीति सारे।।
हर्षणनिज जन जानि जियहिं प्रिय, चाखहु रसमय भोग नेह वारे।।

(४८५)

अचमन दै पुनि पान पवाई।
सिद्धि कुअरि अलबेली अलियाँ, रसिया रघुवर के रस छाई।।
पुष्प गंध दै आरति कीनी, छत्र चमर मन मुदित चलाई।।
हर्षण सेव करी बहु भाँतिन, जेहि ते राम रहे सुख पाई।।
दोहा– चौथी छूटन पाछ दिन, हरदी उत्सव होय।
सिद्धि समुझि कुल रीति, सो वरन सुनाई सोय।।

(४८६)

होरी खेलो रसिक रस राज, आज रंग वर्षन दो।
रस कहि तुमहिं वेद बतरावत, सच्चिद आनँद लखत लखावत,
प्यारे हो तुम पूरण काज, आज अँग परशन दो।। होरी।।
सरहज सारी सबहिं तुम्हारी, रँग रस रसी रँगीली नारी,
चह रँग क्रीड़न सहित समाज, आज दिबि दर्शन दो।। होरी।।
चौथी छूटन वार पियारे, बना बनी सह हरदी न्यारे,
सारी सरहज करि तजि लाज, आज हिय हर्षण दो।। होरी।।

(४८७)

बोले राम रस वारी, प्राण पियारी प्यारी, मोह वशहि किय भावन हे।
शशि शत सुयश सम्हारी, जग एक सुन्दर नारी, लक्ष्मी ललित लजावन हे।
रंग रस रास रासी, भव भले भाँति नासी, रंग केलि रचु पावन हे।
सरहज सारी सबहीं, सरसत सुख में छबही, हर्षण हिय हर्षावन हे।

(४८८)

चलो चलो हो नवेली रँग अंगन में।
लूटो लूटो हो सहेली सुख संगन में।
रंग रँगीली रस भरी, सिगरी मैथिल नारि,
चन्द्रमुखी गज गामिनी, केलि कला उजियार,
देहु सुखहिं सरसाई रंग रंगन में॥
हो हो होरी हर्षि हिय, हर्षण हो हुलसाय,
अबिर गुलाल अकाश चढ़ि, मेघ छटा छहराय,
रंग सरित उमाड़ाई जुरि जंगन में॥
वाद्य बजै बहु भाँति तहँ, उर में उठत उमंग,
श्याम गौर रँग एक मिलि, सोह यमुन युत गंग,
करहिं किलोल रसाई बिन भंगन में॥
रस रूपी रस दायिनी, रस भोगी भर पूर,
लक्ष्मीनिधि की बल्लभा, जानी जग सुख धूर,
अतिशय अनँद अघाई सु उमंगन में॥
सुख साने सुर व्योम ते, वर्षहिं सुमन अपार,
हर्षण हर्षत दुंदुभी, देहि करत जयकार,
भूतर्ल व्यौम बहाई रस रंगन में॥

(४८९)

मंजु मनोरथ मोर, पुरवहु सिय सुकमारी।
रस मय रसिक राम रघुराई, रंग युद्ध कीन्ह त्वराई,

देहिं तिनहिं रस बोर ॥ पुरवहु ॥

अलियन आस अतिहिं अस आजू, सिय साजन संग क्रीड़न काजू।

आनँद अचइ अथोर ॥ पुरवहु ॥

दोउ दल दर्शि देव सुख लहिहैं, सिगरे सुख के सिन्धु समेहैं,

हर्षण हर्षि हिलोर ॥ पुरवहु ॥

(४९०)

सुनु सुनु भाभी मोरी, हौं तो सब विधि तोरी, करहिं मोहिं निर्देशन हे।

राउर आयसु पाई, होरी हिय हर्षाई, क्रीड़हि कल करि केशन हे।

कर लीन्हे पिचकारी, फिरि फिरि चक्राकारी, बलिबोरहिं वर वेषन हे।

हर्षण हिय हर्षाई, जय जय जय गोहराई, वर्षहिं सुमन सुरेशन हे।

(४९१)

दुँदुभि बजति धमकि दुहुँ ओर।

होरी समर विचारि मुदित मन, भई तयारी जहँ लगि जोर।

सखन साथ लै चारहु भ्राता, सिद्धि साथ श्री सिय सुख बोर।

अबिर गुलाल कुँकुमा केशर, हर्षण लै पिचका रंग घोर।

(४९२)

होरी खेलन को आये, कुअर दशरथ के चाये।

वसन विभूषण विविध सम्हारे, श्यामल गौर सुहाये।

कोटि मार मद गार सांवरो, शत शशि शरद लजाये।

निरखि नयन फल पाये ॥ कुअर ॥

रंग रसिक रसमय रघुनंदन, वीर बड़े बनि भाये।
सोहत कर कंचन पिचकारी, अलियन अयनन आये,
जीतन चाह चोराये॥कुअर॥
सिय सों सिद्धि कहति सखि आगे, सजग रहहु सब धाये।
हर्षण हरषि हरावहु समरहिं, इनकी चलै न चलाये।
रहैं मन में इठलाये॥कुअर॥

(४९३)

लजीले सिद्धि सदन में, पिय प्यारी दोउ पाग।
रंग रँगे उमगत उर माहीं, खेलि रहे भल फाग।
दै गुलाल कमनीय कपोले, आपुस में अति राग।
मधुर मधुर रँग बसनहिं डारी, हर्षण हेरि सुभाग।

(४९४)

मिथिला महल मनहारी, जहँ लाल लली पगु धारी,
रँग रस केलि किलोलैं, हँसत मधुर मृदु बोलैं,
चितवनि चित सुखकारी॥जहँ॥
सिद्धि कुअरि अलबेली, जहँ सिय सहित सहेली,
क्रीड़ति सँग धनुधारी॥जहँ॥
दोउ दल रँग रस बोरी, मारि अबीरन झोरी,
दधि की कीच करारी॥जहँ॥
मारा मार मचाई, जय सिय शब्द सुनाई,
होरी है कहि झारी॥जहँ॥

देव बजाय नगारा, केशर कुँकुम धारा,
रँग रस वरषि अपारी॥जहँ॥
सबहिं अपनपौ भूलें, रँग के झूलन झूले,
झरि झरि सुमन सुखारी॥जहँ॥
रसमय भूतल व्योमा, छायो आनँद भौमा,
हर्षण सरबस बारी॥जहँ॥

(४९५)

सखी-मोसे खेलो न रसि रँग रोरी, कौशिल्या जू के लालना।
अलियन आलय आय आज तुम, वीर विरद को बोरी॥कौ॥
रामजी-हम नहिं डरैं काँट के कुसुमन, रसिक भ्रमर सम भोरी॥
सुनैना जू की लाड़ली॥
सखी-नहिं मानहु तो नरपति छौने, निरखहु कृपा किशोरी॥कौ॥
रामजी-जेहि के बल तुम हमहिं डरावहु, शक्ति सो सब विधि मोरी॥
सुनैना जू की लाड़ली॥
सखी-तो जनि पाछे पावहि दीजै, कीजै कला करोरी॥कौ॥
रामजी-बात बनावहु काह करोगी, मिथिलापुर की छोरी॥सुनैना॥
सखी-लहँगा ललित पिन्हा के लालन, देहुँ बनाय सु गोरी॥ कौ॥
रामजी-हम रघुवंशी वीर बाँकुरे, जय जस सदा बरोरी॥ सुनैना॥
सखी-इत नहिं तिया ताड़ुका प्यारे, सब निमि वंश किशोरी॥कौ॥
रामजी-बातन को भुगतान करहु जनि, लखहु समर सम होरी॥सुनैना॥
अस कहि राम भ्रात भल लीन्हे, मसली गुलाल मरोरी॥कौ॥

फिरि फिरि चक्राकार रँगीलो, रँग बरसै बर जोरी।।कौ।।
रँग अबीर मार बहु मारी, अलियन दियो झँझोरी।।कौ।।
देखि दशा सखि तहँ एक दौरी, रघुवर कर पकरोरी।।कौ।।
लपटि झपटि रामहिं लै आई, सिद्धिहिं सौंपि बहोरी।।कौ।।
चुनरी चोली चादर सजिकै, चिन्ह सुहाग सजोरी।।कौ।।
श्याम सखी दै नाम अली सब, हँसी बजाय हथोरी।।कौ।।
पानि पकरि परतम प्रभु केरो, नचि नचाय चित चोरी।।कौ।।
देखि देव दुंदुभि धुनि दीन्हे, वरषि सुमन जय शोरी।।कौ।।
जेहि रुख माया सहित त्रिदेवहु, नचै बिना मुख मोरी।।कौ।।
तेहि कहू मिथिला नारि नचाई, पानि पकरि पुर खोरी।।कौ।।
प्रेम विवश परमेश्वर पूरण, भूले प्रभुता ओरी।।कौ।।
अस जिय जानि प्रेम नहिं पायो, हर्षण सूकर सोरी।।कौ।।

(४९६)

अलि आज अलिन में आय फसे हरि होरी।
सखि सब तेहिं पकरि गुलाल, मली मुख रोरी।
कर की पिचकारी छीन, रंगी रंग बोरी।
तिय को वर वेष बनाय, नचाय विभोरी।
लखि भ्रातहु तहँ लै धाव, अबीरन झोरी।
सोउ सखि गण पाले पाय, बने वर गोरी।
हर्षहि अलि मुख मुसकाय, बजाय थपोरी।
दिय चारहु चतुर नचाय, पकड़ि कर कोरी।

चारहु दिशि मुख दिखराय, कहै भलि भोरी।
मम भैयन के भल योग, सुघर नृप छोरी।
प्रभु भक्तन वश भल भाव, निरखि तृण तोरी।
हर्षण सुर जय जय गाय, सुमन वर्षोरी।

(४९७)

होरी के रंग छाके छयल सब।
राम लखन अरु भरत शत्रुहन, वीर बने वर बांके ।। छयल सब।।
कर लीन्हें कंचन पिचकारी, परत अलिन पर डाके ।। छयल सब।।
मारि अबीर कुंकुमा केशर, भागि जातनिज नाके ।। छयल सब।।
अलियन व्यथित कीन्ह बरजोरी, रंग बोरि रस पाके ।। छयल सब ।।
हो हो होरी राग अलापत, बाजे बजत बना के ।। छयल सब ।।
देखि दशा लक्ष्मीनिधि नारी, सखियन सजी बुझाके ।। छयल सब ।।
रामहिं पकरि रंग के कुंडहि, बोरी अलि अकुंताके ।। छयल सब ।।
तैसहिं तीनों भाइन बोरी, भरी अबीर उड़ाके ।। छयल सब ।।
जै जै जनक लली सब गाई, डंका जीत बजा के ।। छयल सब ।।
व्योम विमान सुमन सुर वर्षत, हनि निशान जय गाके ।। छयल सब ।।
हर्षण होरी रस सरसायो, सब सुख सिन्धु समा के ।। छयल सब ।।

(४९८)

रंग केलि रस छायो जनकपुर।
आनँद अकथ अगाध अनूपम, सिद्धि सदन सरसायो।

अबिर गुलाल के बादल छाये, रंग रसहिं वरषायो।
फाग साज साजे दोउ ओरी, दधि की कीच मचायो।
बजत वाद्य बहु ढोल नगारे, हो हो शब्द सुनायो।
सीताराम सुभग कर केली, जन जिय कहर मचायो।
धूम मची मिथिलापुर माहीं, अलि गण आनंद पायो।
दोउ दल ललित लाल रंग राजत, पगे प्रीति चित चायो।
सुर सब चढ़े विमान गगन में, सुमन वृष्टि झरि लायो।
जय जय कहत बजाय दुंदुभि, आनँद सिन्धु समायो।
पूर्ण ब्रह्म जहँ शक्ति अनादी, रंग रंगे छबि छायो।
सो सुख कहन वेद गति नाहीं, हर्षण हिय हर्षायो।

(४९९)

आरती रंग रंगीले की, शोभति सिय सुख शीले की।
भावती भावन भल जोरी, सोहती सुठि श्यामल गोरी,
मोहती मारहु मद मोरी, पहिरि पट पियर, ज्योति जग जगर,
करत कल कहर, ललित ललि लाल रसीले की॥
हाँथ में कंचन पिचकारी, छूटती रंग रसन धारी,
मारते मार अबिर भारी, कसे कल कमर, करत शुचि समर,
बना बनि विहर, छहर छबि तन मन गीले की॥
व्योम ते पुष्पन झरि लागी, देवता दर्शन अनुरागी,
लोक त्रय भाग भली जागी, सरसि सुख सुघर, पहुमि पर बगर,
ललकि लय लहर, हरषि हर्षण हर्षीले की॥

(५००)

दोउ दल बिरत भये करि होरी।
रंग सरोवर जाय नहाये, समय समुझि सुख सोरी।
करि जल केलि गुलालहिं धोये, बहुरि सुगंधहि बोरी।
करि उबटन सिद्धि नहवाई, चारहु चित के चोरी।
मज्जि दोउ दल कोहवर भवनहि, गये सबहिं सँग जोरी।
वसन विभूषण चन्दन स्त्रग ते, अर्ची श्रीधर छोरी।
चारहु दूलह दुलही पाये, व्यंजन षट रस कोरी।
पान पवाय सिद्धि करि आरति, हर्षण भई विभोरी।

(५०१)

पग परि पुन: बलैया कीनी।
बोली वचन मधुर पिक बयनी, सिद्धि राम रस मीनी।
पूर्ण काम रघुवंश शिरोमणि, भक्तन हित सब दीनी।
जन के दोष कबहुँ नहिं हेरत, सुनि गुण होत अधीनी।
यदपि अयानि सहज जड़ अबला, पै तिहारि हौं हीनी।
अचल अमल अनुराग अनुपम, तव पद पंकज झीनी।
अविरल अकथ अनन्य अनन्तहु, पावहु पति सह भीनी।
सदा श्याल सरहज हम दोऊ, हर्ष रहै तव लीनी।

(५०२)

ननद सिया नित होहिं हमारी।
प्राण-प्राण ननदोई मोरे, रहहिं सदा रस वारी।

सब विधि सेवा करहिं हर्षि हिय, तव सुख हेतु विचारी।
नाम रूप लीला रस राते, संत स्वभाव सम्हारी।
त्रय अकार सम्पन्न सतत है, आपा खोवहि सारी।
ममता अहं दुराशा त्यागी, राग द्वेष दुख दारी।
देखहि सुनहिं तुमहिं कहँ प्यारे, पर्शहिं तुमहि सुखारी।
ज्ञेय धेय हर्षण सब तुमही, पति सह जाहिं जहाँरी।

(५०३)

हृदय हरण हिय बसो हमारे।
नयन विषय बनि बाहर विचरौ, द्विभुज श्याम सुख सारे।
अष्टयाम अनवरत सेइ तोहि, शेष पनहिं उर धारे।
दास धर्म बिन क्षणमपि रघुवर, देह प्राण दुख कारे।
आत्महु होय हजारन टूका, चहौं न ताहि पियारे।
भव रस भूलि राम रस रासी, प्रेम विभोर तुम्हारे।
सीयराम मय दृष्टि लहि कै, भेद बुद्धि मन मारे।
हर्षण पति सह सदा तिहारी, रहौं अकाम अधारे।

(५०४)

एव मस्तु कहि रघुकुल राम।
बोले बिहँसि सुनहु मम प्यारी, स्वपति सहित सुखधाम।
प्राण-प्राण प्रिय आत्मा मोरी, सत्य वचन सब ठाम।
आत्म अर्पि छल छोरि भजी मोहि, मम सुख हेतु अकाम।
भव रस भूली महारस रागी, पति सह मानेहु माम।

चेष्टित रहौ मोर हित प्यारी, सेवन करि अठयाम।
तेहिते ऋणिया भयो तिहारो, सत सत श्रीनिधि वाम।
छन वियोग हर्षण नहिं सहि हौं, गिनहु बिके बिन दाम।

(५०५)

मै अरु मेरो तिहरो प्यारी।
त्रिकरण तीन काल त्रै वाचा, कबहु न मृषा उचारी।
श्री निधि श्याल सिद्धि शुचि सरहज, रहि हौ सदा हमारी।
पूर्व रही अबहूँ तोहि पाई, भयो सुखी हिय हारी।
हमरी तुम्हरी प्रीति लाड़िली, नित्य अचल अविकारी।
अरुझि गयो मन तुम पै बरबस, निकसै नाहिं निकारी।
यहि विधि बात करत दोउ कोहवर, भरे भाव सुख सारी।
हर्षण कुअरि कहो दुख दीन्हेउ, रंग केलि क्षमु वारी।
सो.- कोहवर किय विश्राम, चारों भ्राता प्रेम पगि,
मन परिपूरण काम, रंग केलि श्रम हरण हित॥
दो.- पद पलोटि भरि भाव हिय, पुलकित सिद्धि प्रवीण।
वरन सोवाई गीत कहि, करहिं बजावत बीन॥

(५०६)

दूलह चार गये जनवासे।
श्री निधि गये तिनहिं पहुँचावन, पेखत प्रिय पै रहत पियासे।
चढ़े तुरंगन सखन सहित सब, करत भाव भरि हास विलासे।
दशरथ सह समाज सुख पायउ, मातु मुदित लै गई अवासे।

आसन दै पुनि आरति कीन्ही, प्यार पगी निज नेह प्रकासे।
चार लक्ष गोदान नृपति किय, मुनिन पूजि भल भाव विकासे।
बन्धु सहित रघुवर मुख निरखत, सुख के सिन्धु सबहिं रस रासे।
हर्षण मिथिला पग पग आनँद, अकथ अगाध अनुपम भासे।

(५०७)

भोजन करत जनक अँगनाई।
दशरथ सकल बरातिन लीन्हे, सुख के सिन्धु समाई।
षट रस व्यंजन चार प्रकारी, भाँति भाँति भल भाई।
गारि गान सुनि सुनि सुख मानत, पावत प्रेम बढ़ाई।
अचवन करि लहि पान मसाले, बहु विधि करत बड़ाई।
यहि विधि नित्य नित्य जेवनारी, करि जनवासहिं जाई।
अधिक अधिक सतकार सौगुनो, प्रतिदिन बढ़त जनाई।
हर्षण हर्ष घरात बरातहिं, को कवि वरणि सिराई।

(५०८)

राम मातु सिय मातु मिलापा।
भयो यथा विधि जनक सदन महँ, प्रेम पुनीत प्रथापा।
रानि सुनैना बहु सतकारी, विनय सुशील प्रतापा।
हर्षण दान मान ते पूरण, कीन्ह सेव बिन आपा।

(५०९)

दशरथ मिथिला करत विहार।
वन-उपवन-तीरथ-सर सरिता, मन्दिर-साधु अगार।

निरखत नगर नवल सुन्दरता, नित नित प्रेम प्रसार।
कहुँ सत संग मुनिन के मुख ते, शोधत ब्रह्म विचार।
प्रेम मई हरि कथा सुनत कहुँ, कर्म रहस्यहिं धार।
भगवत-भक्त चरित कहुँ देखत, नाट्य-नृत्य अविकार।
पुत्र सहित कहुँ सभा विराजत, निरखत पुर नर नार।
हर्षण दुलहा दुलहिन चर्चा, करि करि सर्वस बार।

(५१०)

दुलहे पै हौं सखि वारि गई रे।
मुनि के संग लखी पुर जब ते, तन मन धन हिय हार दई रे।
बनरा वेष विमोहेउ बरबस, कुल की कानि खुआर भई रे।
चन्द्रवदन अमृत रस चूवत, पी पी सुख को सार लई रे।
विधु कर निकर मधुर मुख मुसुकनि, शीतल सुखद पियार मई रे।
सुर तरु सुमन झरत जनु बोलनि, सुनतहिं प्रीति अपार पई रे।
चितवनि चारु नयन कजरारे, चित्त चोराय बेकार कई रे।
हर्षण अधर लहर नक मुक्ता, लालच दै जिय जार जई रे।

(५११)

अवध छैल दिलदार बनरा हृदय हरि लीनो।
मन्द मुसुकि चितवनि कर जादू,
आँजि नयन में कजरा स्ववश मोहि कीनो।
कोहवर कक्ष परस लहि तेहि की,
परम प्रीति पगि पियरा हमहुँ सब दीनो।

बाते मधुर भरी रस करिके,
चहत बसन मन नियरा तेहि को होई जीनो।
शील स्वभाव रूप गुण गनिकै,
जियब जगत भल जियरा रसहिं रस भीनो।
चहत नयन लखतै रहि जावै,
रूप रसी धरि धियरा अहँ मम खीनो।
मणि मय मौर लहर लर सेहरा,
पीत वसन द्युति दियरा प्रकृति छबि छीनो।
दूलह नख ते शिख शिख ते नख,
रमत हर्ष हठि हियरा जनम फल चीनो।

(५१२)

दुलहा बड़ो दिलदार मोरी सजनी।
प्रीति रीति पहिचानत सबकी, हिय को हर्षण हार।मोरी.।
नयनन नयन मिलाय दूरि ते, कियो कृपा सुख सार।
करत कलेउ निरखि मम ओरी, मुसक्यो मधु रस ढार।
कोहवर कक्ष करत जब हाँसी, पकर्‍यो हाथ हमार।
परस पाय परतम सुख पायो, मान्यो मोद अपार।
रसमय रसिक राय रघुनन्दन, रसिकन रस दातार।मोरी।
हर्षण होय सबहिं विधि तिनके, रहहु रसी सब नार।

(५१३)

बन्ना बना चित चोरवा सलोना।

श्याम शरीर स्वभायन सुन्दर, बहुरि वेष वर धरवा। सलोना।
नख शिख ब्याह साज सब साजे, मौर मणिन सुख सरबा। सलोना।
कानन कुन्डल परत कपोले, सेहरा लटकि लहरवा। सलोना।
चपकन चारु बिअहुती धोती, हृदय हार लस गरवा। सलोना।
फेंटा कटिहिं कसे कर कंकन, मुदरी हिय की हरवा। सलोना।
नूपुर नवल शब्द रस वर्षे, सोह महावर तरवा। सलोना।
हर्षण शतशशि आनन शोभा, कोटि काम मद मरवा। सलोना।

(५१४)

देखो दुलहा छबि छहराया रे, मन मोहेव सजनी।
सुर नर मुनि जड़ चेतन जेते, बालक वृद्ध नारि नर ते ते,
लखि लखि श्याम सलोनी मूरति, कोउ नहिं पलक लगाया रे ।। मन ।।
पुंसा मोहन रूप ललामा, कोटि मदन विधु वारत जामा,
शोभा सुधा वरषि भुँइ ऊपर, रस की धार बहाया रे ।। मन ।।
हुलसहिं हिय ते जे बिन ब्याही, ब्याही मींज हाँथ पछिताहीं,
गौने की ह्वै मौन सखी सत, बरबस मनहिं लोभाया रे ।। मन ।।
रती रमोमा वरहिं बिकानी, शारद शचि सब फिरै लोभानी,
महि पताल अरु व्यौम में हर्षण, दशदिशि धूम मचाया रे ।। मन ।।

(५१५)

बनरा बड़ो चलाका, समुझ तै सजनी।
हरदी दिवसहिं राज भवन में, बिलग बैठि तन ढाका। समुझ ।।
दिय चलाय चुपके पिचकारी, रसिया रंग रस छाका। समुझ ।।

बहुरि आय मुख मसलेउ रोरी, परेउ मोहि पर डाका।समुझ।
पानि पकरि सिय के दल छोड़ेउ, रंग वीर वर बाँका।समुझ।
चोली चूनर चादर बोर्यो, तेहिं पर करत मजाका।समुझ।
भीगे वसन बदन की झलकन, मुसकत मुख दृग ताका। समुझ।
हर्षण हृदय हरण हँसि हेरत, जिय की जरनि बुझाका।समुझ।

(५१६)

मारी रे मोहिं बनरा नजरिया।
भृकुटि चाप दृग कोर को रोदा, पुतली को करि बाण विहरिया॥
कज्जल विष बोरे बड़वारे, खैंचि श्रवण लौं ललन लहरिया॥
करि मम लोभी लोचन लक्षहिं, मारेउ चित की चोर चपरिया॥
घायल भई सूझ नहिं एकौ, कहाँ गई जग ज्योति जबरिया॥
श्यामहिं श्याम सकल संसारा, समुझि परै सत सत्य उचरिया॥
औषधि करौं न नेक सखीरी, भला भई बेकार बेगरिया॥
जो मोहि हन्यो हर्ष सोइ राखी, देई कृप करि रसहिं अपरिया॥

(५१७)

मोहन मुख मुसकनियाँ, हमार जिय मारे।
अधर अमिय पुनि पान की लाली, दाड़िम दँत दमकनियाँ।हमार।
शशि कर निकर सुधा जनु पूरी, सुख प्रद हरुअ हँसनियाँ।हमार।
बोलनि फूल झरत जनु मुख ते, शुचि सुवास दिक-तनियाँ।हमार।
मम दिशि देखि सिया को दूलह, मुसक्यो मधु वर्षनियाँ।हमार।
तब ते कौन कहाँ सब बिसर्यो, मैं अरु मोर कहनियाँ।हमार।

देखत रहौं ताहि को अपलक, लोचन लाभ लोभनियाँ। हमार।
हर्षण कहै जाहि जो भावै, बनी-बना की बनियाँ। हमार।

(५१८)

अलि चित चोरवा के अँग अँग चोर।
काह अलक का कानन कुन्डल, का सेहरा का सिर मणि मौर।
का भल भृकुटी का दृग कजरे, काह केशरिया माथे खौर।
काह नासिका काह कपोला, काह अधर मुसकनि रस घोर।
काह चिबुक का कण्ठ-हृदय कटि, का कर-करज कंध कलकोर।
काह उरु-जंघा-पद प्रिय तम, का नख अंगुलि पदतल ठौर।
का चितवनि मधुरी वर बोलनि, काह चलनि का मिलनि विभोर।
हर्षण मन को मोहन मधुमय, सुख सुषुमा श्रृँगार में बोर।

(५१९)

बनरा विलोकि भई हौं बौरी।
चितवनि जादू डीठ औ टोना, मार्‌यो मोहिं अजहुँ लखि लोरी।
सास श्वसुर कुल कान गँवाई, श्रुति मर्याद रही नहिं थोरी।
हर्षण काह करौं नहिं सूझै, सबहिं भाँति मति की हौ भोरी।

(५२०)

सखि जस दुलहा तैसे दुलहिया।
नख शिख ते सर्वाङ्ग अनूपम, सुख सुषुमा श्रृँगार सुलहिया।
शोभा सदन मधुर मन मोहन, दोउ नृप-रानी खेत उलहिया।

रूप शील गुण ज्ञान गरुअता, श्याम गौर रस रसहि भुलहिया।
हर्षण सकल भाँति अनुरूपी, दोउ सुख सिन्धु समाय फुलहिया।

(५२१)

देखो दुलहा दुलही अयोना।
मरकत कनक वरण वर जोरी, श्याम गौर घन दामिनि लोना।
मिथिला महल बिराजहिं अनुपम, आनँद आनँद आनँद बोना।
सेहरा सिरहिं मौर अरु मौरी, व्याह विभूषण मणि मय सोना।
कोटि काम रति लाजहिं तन पै, शारद शशि शत बदन सलोना।
मन डेरात सखि देखि सुशोभा, लगै न डीठ मूठ अरु टोना।
धूम मची पुर खोरहिं खोरी, सीता राम सुभग रस भौना।
हर्षण नयन बसे दोउ प्यारे, झूलत रहैं युगल नृप छौना।

(५२२)

अजब अली सिय प्यारी-पियरवा।
दशरथ-जनक प्रेम प्रति पाले, दोउ दोउ नृप के गोद खेलरवा।
बना बनी बनि मिथिला मोहे, धारे मौरा मोरी सेहरवा।
दुलहा धनि भल दुलही पायो, दुलही धनि पिय पाणी पकरवा।
चितवनि मुसुकनि मिलनि परस्पर, प्रीति पगी सोइ जाने जियरवा।
रसमय रसिक रसद दोउ प्यारे, इक इक सुख के हेतु हियरवा।
परिकर सहित नित्य नव लीला, मिथिला अवधहिं सारै धियरवा।
हर्षण हमहिं गिनैं जन आपन, राखहिं दूरी अथवा नियरवा।

(५२३)

नौशय बबुआ मन में मदीले।

शान बान सौंदर्य सुधानिधि, सौकुमार्य सुठि सोहे सुशीले।

सौष्ठव लावण माधुर अंबुधि, लालित पन जनु सबहीं सकेले।

वशीकरन मन मोहन दुलहा, कजरे बड़रे नयना नुकीले।

अरुण श्याम सरसीरुह चिक्कन, दर्श समान कपोल रसीले।

अधर अरुण अमृत रस साने, कोउ कोउ जाने प्रेमी हठीले।

पै सोउ जनकलली मुख देखत, ठगि से रहिहैं गजब गर्वीले।

सुख सुषुमा श्रृँगार की मूरति, सिय लहि हर्षण रामहु रँगीले।

(५२४)

बनरा अवध ते आया, चितय चतुर के चित्त चोराया।

अलकैं अति गभुआरी, छूटि कपोलन कारी,

प्रेमिन प्राण लुभाया, मुसुकनि मधुरी मनहिं मोहाया॥

पहिरे केशरिया जामा, फेंटा ललित ललामा,

मौर मणिन मन भाया, शीशहिं सेहरा लर लटकाया॥

कुण्डल कानन सोहे, केलि कपोलहि मोहे,

मनहु मीन सुख पाया, कुण्डहिं करत किलोल सुहाया॥

कोटि काम छबि छाजे, शारद शशि शत लाजे,

हर्षण हर्ष अमाया, मिथिला मधि कल कहर मचाया॥

(५२५)

मोहनी मुरतिया लखिकै, मोहेउ मनुआ मोरा,

लखतउ लोचन ललचै मोर हे, प्रेम के पियासे परतम॥
मधु ते बोरे बन्नी बन्ना, रसकि रँगीले रस के थन्ना,
चितवनि मुसुकनि जादू जोर हे, भानु को भुलाये भलतम॥
मिथिला वासी नर औ नारी, ज्ञान गमाय भे प्रेम पुजारी,
पागे रहत रसहिं रस बोर हे, राम के कृपा से रसतम॥
अनुपम अंग अंग की शोभा, जितहिं जाय मन तितहीं लोभा,
कहर करै हिय मौरी मौर हे, हर्ष को हेरायो प्रियतम॥

(५२६)

राजत राज कुमार कुमारी।
बनी बना के वेष सिंहासन, मिथिला महल मझारी।
कोहवर कक्ष सिद्धि ते सेवित, प्रियतम प्रेम पुजारी।
नीलकमल-मणि-वारिद बनरा, विद्युत बनरी पियारी।
व्याह विभूषण विविध विमोहै, मनुज दशा न विचारी।
रती रमोमा शची शारदा, जेहि पै आपको वारी।
तहाँ नारि की कहा चलावै, मोहन मोह अपारी।
हर्षण खग मृग लता औ भूरुह, राम सनेह सम्हारी।

(५२७)

अली बनरा बनो है मोहना।
ब्रह्मा विष्णु महेश मोहायो, शक्ति सहित जिय जोहना।
सुर नर मुनि जड़ चेतन मोहेव, रूप रसिक दृग दोहना।
अलक हलक मुख झलक ललक चित, सेहरा सुभग सो सोहना।

तिरछी तकनि लोभाय मुसुकि मृदु, छहर छहर छबि छोहना।
जरकसि जामा पहिर पीताम्बर, मौर माल मणि पोहना।
मिथिला नगर में धूम मचायो, प्रीति परख कछु कोहना।
हर्षण हेरि हृदय हरि लीन्हों, जग को नहीं टटोहना।

(५२८)

दुलहे पै कोउ टोना न मारे।
कोइ कोइ नारि नजर गड़ि लागै, असही दुसही दोखिन दारै।
शंकित सखी डरत जिय मेरो, लावहु राई लोन उतारे।
रक्षा मन्त्र पढ़हु पुनि मंगल, देहु डिठोना ललित लिलारे।
गौरि गणेश महेश मनावहु, भानु चन्द चित चैन को सारै।
विधि हरि हमहिं देहि यह मागे, बना बनो रह लोचन तारे।
मधुर मधुर मन मोहन रसिया, दोउ दृगते कहुँ टरै न टारे।
हर्षण व्याह वेष चित चोरत, हृदय हरण हिय बसै हमारे।

(५२९)

मोहन मूर्ति मधुर मोहने की।
बानिक वेष बन्यो बनि बनरा, केहि विधि कहौं छबी छोहने की।
सुखप्रद सुभग श्याम सुख कन्दन, पूरित रसहिं दिव्य दोहने की।
रस में रमैं रमावै सब कहँ, रसिया राम जनहि जोहने की।
तकनि हँसनि बतरानि माधुरी, मिलनी महत मोद ओहने की।
बैठनि उठनि चलनि चित चोरति, शोभित सिंह ठवनि पहुने की।

जामा पीत कसे कटि फेंटा, मोहै मौर सुभग सोहने की।
हर्षण हेरि हेरानो हियरा, हरि के रूप रसे रहने की।

(५३०)

आली अलवेला अवध को छैला।
अजब अनोखे अति अनियारे, बड़रे कजरे दृग मटकैला।
चित्त चोर चातुर्य चपलता, चितवनि वशी सहज सुख शैला।
मुसुकनि मोहनि मधु रस वर्षनि, मधुर मधुर मन करति अमैला।
परश देत प्राणहिं कर प्रणयी, प्रेम विवर्धत राग रँगेला।
रसहिं रमै रसमय रघुनन्दन, रसिकन को रस वितर बुझेला।
नख शिख व्याह विभूषण भूषित, शोभित शोभा सकल सकेला।
कोटि काम शशि शत शत लाजहिं, हर्षण हिय को हार नवेला।

(५३१)

हमारी अलबेली सिय सुकुमारी।
सुख की खानि शोभ की सिन्धू, सुषुमा की अलि अनुप अगारी।
नित्य एक सम अधिक न जाके, मोहति मन मूरति श्रृंगारी।
बनरी वेष विभूषण भूषित, अंगन चुअति छहरि छबिधारी।
रती रमोमा शारद शचि सब, वारि पदहिं सेवहिं सुख सारी।
शारद विधु बहु विजित वरानन, अमृत मय दिवि देह सम्हारी।
रस रूपी रस भोगी रसिका, रामहिं रसहिं रमावन वारी।
दूलह भाग विभूती शोभा, हर्ष दुलहि लगि बढ़ी अपारी।

(५३२)

बनी बना दोउ हमरे अंधारे।
प्राण प्राण प्रिय जीवन जीके, सीता राम सदा सुख सारे।
मौरी मौर धरै हिय मंडप, बनै रहैं दोउ प्राण पियारे।
चन्द्र चन्द्रिका भानु प्रभा सम, भरे अमिय दोउ कुल उजियारे।
वर्षत रहहिं रसहि निशि वासर, भक्त भूरुहनि करत सुखारे।
मुसुकि मधुर चित चोर सुचितवनि, विकसित वदन लसै हिय हारे।
परिकर सेवित शान्ति निकेतन, विहरत रहें दोउ रस वारे।
हर्षण हेरि हृदय नित हर्षें, श्याम गौर गुण गणन अगारे।

(५३३)

आली अखियन में अखियाँ लग गई रे।
श्याम सुँदर मन मोहन दुलहा, चतुर चितय चित चोर लई रे।
श्यामहि श्याम दिखात सबहिं कछु, श्रावण अंधहि हर हर मई रे।
रैन दिवस गृह काज न भावत, राग रंग बुधि खोय दई रे।
पलक ओट नयना नहिं चाहत, निमिष विरह दुख दुसह जई रे।
तेहि ते राज भवन द्रुत गवनहुँ, लोक लाज कुल कान खई रे।
सास श्वसुर अरु नँनद कहें जो, सहिहौं बनरा हित हिय चई रे।
हर्षण हिय को हरण पियरवा, बड़े भाग पुर बीच पई रे।

(५३४)

ये छैला छवीले नृपति छौना।
कहँ पायो एती सुन्दरता, डार्यो चितय के जादू टोना।

वशीकरण मुसुकानि माधुरी, भूली भूषऽरु प्यास सोना।
अधर सुधा भरि सुभग दिखाई, कीन्हे मदीले मनहिं मौना।
कल कपोल चिक्कन रस वारे, सबको लुभाये ललित लोना।
अलक शीश शिर पैंच मणिनमय, सेहरा सुमौरहु सुखहिं बोना।
कर कटि पद सर्वाङ्ग अनूपम, को कवि कहावै वरणि गौना।
वस्त्र विभूषण अँग अँग साजे, हर्षण हेरायो हृदय दोना।

(५३५)

सखि दुलहे को दिल में बसाय राखो।
जो कहुँ मिलै एकान्त मधुर मोहिं, हियरा सों हियरा मिलाय राखौं।
लागि गले छन छोड़ू न वाको, सर्वस दै अपना बनाय राखौं।
अरस परस आलिंगन चुम्बन, अधरन में मन को मोहाय राखौं।
चितवनि चारु चोरावन चित की, अँखियन में अँखियाँ लड़ाय राखौं।
करि करि बात भरि रस मधुरी, मन बुधि अपनो रँगाय राखौं।
जैसो कहै करौं सोइ सजनी, कुल मर्याद गमाय राखौं।
हर्षण कहौं हृदय की बतिया, लोक प्रलोक बहाय राखौं।

(५३६)

बनो रहै दुलहा दुलही का मंगल।
प्रीति पगे अनुपम सुख सोवैं, सिद्धि सदन सुख सनो रहे। दुल.।
मंगल देखहिं मंगल परशहिं, मंगल श्रवणन तनो रहे। दुल.।
मंगल सूँघहिं मंगल स्वादहिं, हृदय हर्ष हठि घनो रहे। दुल.।

(५३७)

नित उठि बिदा अवधपति मागत।

राखहिं जनक भरे अनुरागहिं, गवनब नाम नीक नहिं लागत।

दिन प्रति सहस भाँति लहि स्वागत, प्रेम रज्जु नृप बँधे न भागत।

समय समुझि सुत-गाधि-शतानँद, नृपहिं बुझायो वचन सुधागत।

दशरथ कहँ अब आयसु देवहिं, लै बरात गवनहिं सुख पागत।

आयसु शिर धरि तिरहुत भूपहु, बिदा साज साज्यो जग जागत।

हर्षण जाय सुनैनहि बोल्यो, विरह बाढ़ बहि श्रीनिधि बागत।

जाहिं अवध सुनि मिथिला वासी, विरह सने सियरामहिं रागत।

(५३८)

दाइज दीन्हे विविध विधान।

हय-गय-रथ-गो-वृषभ-सु महिषी, वसन विभूषण रत्न सुजान।

भूमि भवन बहु दासी दासहु, अन्न अमित को करै बखान।

अकथ अपार दियो धन राशी, जेहि लखि लज्जित इन्द्र भुलान।

सिय सुख हेतु हृदय अनुमानी, सर्वस पठये जनक अमान।

दशरथ सहित बरातहिं पूजे, साधु संत सुर मुनि सनमान।

है प्रसन्न सबहीं हिय हर्षे, भूपति भाव भले उर आन।

स्वागत शिष्टाचार अनूपम, हर्षण शेष थकै करि गान।

(५३९)

राज भवन में राजकुँअर आये।

पितु आयसु लहि बिदा करावन, बनरा वेष अनूप बनाये।

लक्ष्मीनिधि लै गये मातु ढिग, विरह भयातुर भान भुलाये।
देखि सुनैना मिली प्रेम पगि, सिद्धि सहित नयनन जल छाये।
चारिहु भाइहिं दै सिंहासन, बहुरि उबटि चारिहु नहवाये।
वसन विभूषण अँग अँग साजी, छरस रुचिर भरि भाव जिवाये।
पान गंध दै आरति कीनी, बारहि बार बलैया लाये।
हर्षण हिय वियोग सुधि आनत, कंपति वदन सुरति बिसराये।

(५४०)

श्री सुनैना मैया आयसु देहु हमें।
बिदा होन तिरहे ढिग आये, करत प्रणामहिं त्रुटि को छमें।
कृपा कोर पालब नव नेहन, जिमि निज संतति सदा ममें।
हर्षण अवध रहैं या मिथिला, तिहरे हैं नहिं प्रीति कमें।
शुचि सनेह या पुर को जननी, वशी कियो मोहिं रहौं रमें।
सिद्धि कुअरि लक्ष्मीनिधि भावा, ऋणिया करि इत राख नमें।
राउर नेह जनक वात्सल्यहु, जान न देवत नेक भ्रमें।
लोक वेद कुल कानिहिं रक्षन, बरबस गवनब शान्ति शमें।

(५४१)

भाव भरे सुनि वचन विरह के।
सहि न सकी श्री सिद्धि सुनैना, मुर्छि परी महि हिय अति दह के।
निज कर कमल परशि रघुनन्दन, चेत कराये बहु भल चह के।
हर्षण धीर धरत नहिं जियरा, झर झर अश्रु चुअै रस कह के।

(५४२)

आज अवध को जै हौ पियरवा।
चन्द्रकिरण रस रसिक चकोरी, अमा रैन तेहिं भाव न भोरी।
तैसहि गिनहु स्व सरहज लालन, दीन दुखी बनि बसि हौं या घरवा।
सुन्दर वदन दिखाय साँवरो, मोहेउ मन बुधि आत्म रावरो।
कहाँ जाँव कत करौं बावली, जानौं नहिं कैसे जीहौं जियरवा।
सिद्धि सबहिं विधि तिहरी दासी, रूप सुधा की परम पियासी।
भूलि न जावहु हमहिं हृदय ते, रहै कृपा की कोरी कुँअरवा।
कहहु कबै अब मिथिला अइहौ, नयन लाभ सब कहँ दिव दैहौ।
नित तुम्हार गिन गुण गण पाँती, जिऔं जगत सुनि आवन नियरवा।
नतरु हहरि मरिबो जिय जोइहौं, विरह वह्नि या तन को खोइहौं।
तुम बिन परम पदहुँ नहिं चाहौं, सत्य सुनहुँ हँसि हर्षण हियरवा।

(५४३)

राम तिहरी मुरतिया मन में बसी।
बिन देखे नयना नहिं मानत, बिनु वारी मछरिया तलफैं तसी।
छन-वियोग की शंकहि आनत, हिय धीरौ न धरिया धड़कै कसी।
काह करौ कहँ जाँव न सूझत, दुख के अगरिया अतिशय फँसी।
जान कहत अब अवधहिं प्यारे, सुनि शोक सगरिया धड ते धँसी।
प्राण प्राण जिउ जीवन मोरे, सुख तिहरो हमरिया सत सुख लसी।
दरश त्वरा पहिचान हृदय की, दै दर्शहिं बिहरिया विरहा नसी।
हर्षण यदपि अयोगी अबला, तउ तिहरी सुखरिया सरहज रसी।

(५४४)

तुम बिन कल न परै मोरे श्याम।
सुभग शरीर वेष या बनरा, झूल नयन अभिराम।
हँसनि बोलनि तकि तकनि सुधिहिं करि, होइहि हाल बे काम।
वर्षत वारि विलोचन बितिहै, हर्षण आठहु याम।

(५४५)

प्यारे कहहु कबै आवोगे।
मन्द मन्द मुसकाय दरश दे, जिय की जरनि जुड़ावोगे।
चितवनि चारु चलाय चित्त को, सुख के सिन्धु समावोगे।
सुधा सरिस मृदु वचन मधुर मधु, बिहँसि बोलि बतरावोगे।
सुन्दर श्याम सलोनी झाँकी, मिथिला मधि दिखरावोगे।
पाणि परशि अब कब रघुनंदन, हमसे हँसत हँसावोगे।
सरहज जानि आपनी लालन, प्रेम पगे रस छावोगे।
हर्षण कहहु सत्य सुखदायक, सिद्धिहिं भूलि न जावोगे।

(५४६)

प्यारे तेरो जाव न भावत मोही।
लखतहु लोचन ललकत लालन, कबहुँक तृप्त न होंहीं।
गवनब बात सुनत दुख दागी, वारि बहाव विछोही।
दीनबन्धु इन दीनन दुखियन, दियो दर्श जिय जोही।
नाहित हहरि फूटि ये जैहैं, इमि रटि ररिहा रोहीं।

करुणा कर कोमल रघुनन्दन, दया सिन्धु बिनु कोही।
सत्य संध शरणागत वत्सल, विनवौं पग परि तोहीं।
करिबो कृपा जानि हिय हर्षण, हौं पथ प्रेम बटोही।

(५४७)

कैसे रहहुँ कहहु या मिथिला।
प्राण प्रिये प्रीतम ननदोई, तन मन बुद्धि भई शिथिला।
सुनत अदर्शन छतिया धड़कत, भये वियोग कहा कथिला।
हर्षण चलहु संग जो तिहरे, होय सँकोच तुम्हैं पथिला।

(५४८)

मिथिला जनि छाँडयो कहौं कर जोरिया।
विरह विकल सब सारी सरहज, होइहैं श्याल समेत खुअरिया।
आवत रह्यों इतहिं प्रति मासन, अहनिशि बस्यो ह्रदय हिय हरिया।
तिरहुत देश भूलि जनि जैयो, है तिहरी सुखप्रद ससुररिया।
ननँद के नाते नव ननदोई, मानेउ सिद्धिहिं दासी दुलरिया।
सेवा लेत रहेव नृप लालन, विनती करौं बहुत पग परिया।
श्यामस्वरूप मदन मन मोहन, हँसनि हर्‌यो जिय जरनि जबरिया।
हर्षण नयन न सुखिहैं जौ लौं, आय बहुरि नहिं पोंछिहौ पुतरिया।

(५४९)

विनती सुनो मोरे मन के मोहनमा।
प्रीति फँसाय जात अब अवधहि, कब देखि हौं मुख शशि ते सोहनमा।

विरह पीर जिय जरत अहर्निशि, धड़कत हियरा वर्षे नयनमा।
आवन आस सेव हित तिहरे, जिऔं विकल बनि बौरी भुवनमा।
सिद्धि हृदय की जानत सबहीं, अंतरयामी सिय के सजनमा।
जानि निजाश्रित किहेउ यथा रुचि, दासी के गति हिय के हरनमा।
छमेव सकलअपराध हमारे, पाप विनाशन जिय के जोहनमा।
हर्षण कृपा कोर करि प्यारे, दर्शन दीन्हेउ रस के दोहनमा।

(५५०)

ललन मोरी विनती सुनो सुखधाम।
ननँद किशोरी अति गभुआरी, थोरी उमर अभिराम।
सुख में पली प्राण प्रिय सब की, अमला सुखद गुणग्राम।
रस रूपी रसिका रस दानी, खानी छबी सत काम।
तेहि सुख कहँ सुख मानि साँवरे, पावौ उरहिं विश्राम।
पलक पुतरिया पलियो प्यारे, पैया परो प्रिय श्याम।
जो अपराध बने कछु तेहि ते, छमियो लला तव वाम।
हर्षण दूनहु लोचन तारे, बसियो हृदय अठयाम।

(५५१)

हा है हो लला अब आँखिन ओट।
चन्द्रवदन मुसकत मधु मधुरे, झरत सुधा सुखमय शुचि होंट।
भरि दृग दोनन पियन न पैहौं, आय गये हो दुर्दिन खोट।
अस कहि सिद्धि मुरछि महि व्याकुल, हर्षण परी विरह के चोट।

(५५२)

परशि पानि श्री सिय के सजनवाँ।
सिद्धिहिं चेत कराय प्रेम पगि, वचन कहे मृदु मन के मोहनवाँ।
प्राण समान प्रिये मोहि प्यारी, भूलि सकौ नहिं तिहरो छोहनवाँ।
मम मन मनहिं मिलाय भूलि भव, मोहि भजी तजी काम कोहनमा।
जीति लियो अपने भल भावन, वशी भयो बसि हिय के भवनमा।
लोक-वेद-विधि के बस गवनहु, बिलग होन नहिं चाहैं नयनमा।
अवध जाय अइहौं पुनि द्रुतहीं, नेह विवश ह्वै तिहरे अँगनमा।
हर्षण हृदय बसी तव मूरति, जानहु अपने जिय को जोहनमा।

(५५३)

प्रेम विवश प्रभु चरण परी।
विरह वह्नि बहु झुलसि सुनैना, दोउ दृग वर्षत वारि झरी।
लाल लाड़िले कहि कहि रोवति, करुणा की जनु मूर्ति ढरी।
समुझाये रघुवर बहु भाँतिहि, हर्षण तब कछु धीर धरी।

(५५४)

सियहिं प्यारि पगि प्रेम में रानी।
रामहिं सौंपी नेह नहावत, तैसहि तीनहु भाइन मानी।
माण्डवि उर्मीला श्रुतिकीरति़, क्रमशः अरपी भाव भुलानी।
पानि जोरि विनती वर कीनी, श्रवण सुखद मधु मधुरी बानी।
पूर्ण काम संकल्प सदा सत, जन गुण गाहक विरद महानी।

दोषदलन-करुणा-कृप-आगर, सुख के सिन्धु सबहिं सुखदानी।
आपन जानि प्राण प्रिय प्यारे, रक्षेउ सीतहिं आश्रित जानी।
मिथिला हर्षण भूलि न जायो, दीन्हेउ दर्श द्रुतहि इत आनी।

(५५५)

सीता जीवन ज्योति हमारी।
सुख की खानि सजीवनि मूरी, पाल्यो अवध बिहारी।
सींचि कृपा की कोर नेह नव, बाढ़यो प्रीति पसारी।
जोगवत रहेउ अहर्निशि लालन, जानेउ जीव जिया री।
छम्यो सकल अपराध तासु के, भोरी बाल बिचारी।
समय समय पाती पठबायो, लिखि के कुशल क्रिया री।
लली वियोगिनि बहत बिरह सरि, खेच्यो शरण तिहारी।
हर्षण दम्पति एक आत्म है, बनिहौ परम पियारी।

(५५६)

मैया मानहु वचन हमारे।
प्राण प्राण सिगरी तव सन्तति, सानौं सुखहिं निहारे।
पलक पुतरि रखिहौं जिय जानहिं, परमा प्रीति पसारे।
तेहि सुख गिनौ स्वसुख री जननी, पुरवहुँ आस तिहारे।
लोक-वेद विधि विलग न रहिहौं, आतम एक विचारे।
समुझि शोक परिहरहु हृदय के, सुख के सिन्धु समा रे।
मिथिला प्रेम कियो मोहिं निज वश, आउब द्रुतहिं इहाँ रे।
हर्षण हृदय बसे नित विहरौं, नित नव नेह नहा रे।